संज्ञा : संप्रदान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : अपादान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : संबंध

प्रत्ययहीन सामासिक रूप मिलता है

एक स्त्री॰ हाँस गइ १४

एक॰पु॰ के प्रत्यय युक्त उदाहरण नहीं है।

एक॰ स्त्री॰ में –री प्रत्यय मिलता है जो बहु॰पु॰ संबंधी के साथ लगता है, यथा

मुधि मउराणी १४

बहु॰ पु॰ के भी प्रत्यययुक्त उदाहरण नहीं हैं।

बहु॰ स्त्री॰ में –हिं प्रत्यय मिलता है, जो बहु॰ पु॰ संबंधी के साथ लगा हुआ है हाथहिं सोहहिं ११

संज्ञा : अधिकरण :

प्रत्ययहीन संज्ञा शब्द एक॰पु॰ में केवल निम्नलिखित है राउल ११

बहु पु संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं कान १४

स्त्री॰ के प्रत्ययहीन उदाहरण नहीं है।

एक॰पु॰ –इ । –े प्रत्ययों के साथ मिलते हैं

(अकारान्त में) –इ पखइ १२

" – घरे १४

एक॰स्त्री॰ अकारान्त शब्द – प्रत्यय के साथ मिलते हैं बोलयं १४

बहु॰ पु॰ स्त्री॰ अकारान्त । इकारान्त शब्द –हिं प्रत्यय के साथ मिलते हैं

कानहिं ११ आंखिहिं ११

संज्ञा : संबोधन :

कोई उदाहरण नहीं है

सर्वनाम शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं है।

प्रत्यययुक्त केवल एक उदाहरण है

–म्हउं संबंध॰ बहु॰ पु॰ अम्हाणउं १०

सर्वनाम : द्वितीय पुरुष

कोई उदाहरण नहीं है।

सर्वनाम : तृतीय पुरुष : [तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम एवं संकेतवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन रूप केवल निम्नलिखित है

सर्व० कर्ता० (मूल) एक० स्त्री० इस १२

प्रत्यययुक्त रूपों की स्थिति विभिन्न कारकों में इस प्रकार है

–ो सर्व० कर्ता० (मूल) । कर्म० (मूल) तथा वि० एक० पु०
मा ११ सो ११ सो १२, सो१२, मो ११

–ा सर्व० कर्ता० (मूल) एक० स्त्री० सा १४

–न्हि सर्व० कर्म० (विकृत) बहु० पु० जान्हि ११

–ु वि० बहु० एहु १०

सर्वनाम संबंधवाचक [तथा संबंधवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन रूप नहीं है।

प्रत्यययुक्त रूपों की स्थिति निम्नलिखित है

–ो सर्व० कर्म० एक० पु० जो ११

–न्हि सर्व० अधि० एक० पु० जहि १८

–ा वि० एक० स्त्री० जा १४

सर्वनाम : प्रश्नवाचक [तथा प्रश्नवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन प्रयोग केवल निम्नलिखित है

कर्म० एक० पु० का १० काइ १२

प्रत्यययुक्त प्रयोग भी केवल निम्नलिखित है

–ु संबंध (?) एक० पु० काहु १४

–मुणो संबंध एक० पु० कामुणो १२

सर्वनाम : निजवाचक [तथा निजवाचक विशेषण]

कोई उदाहरण नहीं है।

विशेषण शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विशेषण :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित है

एक० बहु० पु० स्त्री० काउल १२ ममल ११ गुर ११ मोटर १७ ।

प्रत्यययुक्त प्रयोग निम्नलिखित है

–उ [illegible] एक० बहु० पु० दमउ १० भाउंडउ ११ रहाउ ११ मोटउ १२
धन [उ] १२ दमाउउ १२ ऊंचउ १२ पैठउ ११ सम्पउ १४

[–उ प्रत्यय ऐसे पु० अकारान्त विशेषण शब्दों के साथ ही प्रयुक्त हुए हैं जो प्रत्ययपुक्त विशेष्य के पूर्व, विशेष्य के रूप में स्वतः अथवा विशेष्य के अनंतर आए हैं।]

–ी एक स्त्री० पुसूकी १२ जइसी १४ कइसी १४,वाछी १४

[–ी प्रत्यय अकारान्त।आकारान्त विशेषण शब्दों के साथ ही लगा है।]

–ा बहु पु० सूता ११

– बहु पु० णइं ११

[–ं प्रत्यय ऊपर आ चुका है, बहुवचन रूप देने के लिए उसके साथ – लगाया गया है।]

क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

क्रिया : सामान्य वर्तमान :

–अइ तृ पु एक० पु०स्त्री० [दो] हइ ११ पइ ११ मोहइ ११, पावइ ११ घइ ११ अ[ा]वइ १२, करइ १२ सोहइ ११ मोहइ ११ सुहावइ १४ लावइ १४, पइसइ १४ बीसइ १४

–इ तृ०पु० एक०पु० आथि ११

–अति तृ पु० एक स्त्री भावति १४

–अहि : तृ पु० बहु० पु० : चाहहि ११

क्रिया : सम्भावनार्थ वर्तमान :

–अइ तृ पु० बहु० पु० लावइं १० देखइं १०

क्रिया : सामान्यभूत और भूत कृदन्त :

–इअउ तृ०पु० एक०पु० भूत कृदन्त किअउ १२, माठिअउ ११

–ईअउ तृ०पु० एक०पु० भूत कृदन्त दीअउ ११

–ई „ „ „ स्त्री० „ किही १२

[सामान्यभूत अक क्रियाओं के वचन और लिंग कर्ता के अनुसार तथा सक० के कर्म के अनुसार हैं।]

क्रिया : सामान्य भविष्यत :

कोई उदाहरण नहीं हैं।

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त :

एक ही उदाहरण है

–ं एक० फरहरें पर ११

क्रिया : वर्तमान कृदन्त :

–अतु तृ०पु० एक पु० देखतु १२, बीसतु ११

–अंत तृ०पु० बहु पु० बोलन्त १२

क्रिया : भविष्यत् कृदन्त

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : विधि :

—अउ द्वि० पु० एक० पु० चाहउ ११
—उ द्वि०पु० एक० पु० कानु ११ कोपु १२

क्रियार्थक संज्ञा :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

अव्यय : स्थान सूचक :

—ु एतु ११, तेतु ११

अव्यय : काल सूचक :

— तें १४

अव्यय : स्थिति सूचक :

पर कापुरें पर ११

अव्यय : कार्य प्रणाली सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : संयोजक :

—ओ मघउ १० पा ११
—ु मनु ११

अव्यय : निषेध सूचक :

प्रत्ययहीन न न ११ न ११ न १४
—उ नउ ११ नउ ११
—ा ना ११

[सम्भवतः न से ना छंद की मात्राओं को पूरा करने के लिए किया गया लगता है।]

अव्यय : निश्चय सूचक :

—ए सपना ११
—ुँ माहुँ १४
—उ मागेउ १०

अव्यय : संबोधन सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : परिमाण सूचक

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : प्रश्न सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

चतुर्थ नखशिख

संज्ञा शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

संज्ञा : कर्ता (मूल)

एक॰ पु॰/स्त्री॰ विभिन्न स्वरांत संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

पु॰ कच्छा १७ बच्छा १८ अंमृतु १७

स्त्री॰ कंबी १६, टविकवि १८

एक॰पु॰ अकारान्त संज्ञा शब्द –ु तथा –उ प्रत्ययों के साथ भी मिलते हैं

–ु समाहु १७ संगदं १७ पहिरणु १७ बचु १८, पाचु १८

–उ पातउ १८

ए स्त्री के कोई प्रत्ययुक्त रूप नहीं मिलते हैं।

बहु पु अकारान्त शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

धम १६, टेस्त १८, मदन संदन १९ बोस्त १८

बहु स्त्री॰ के कोई प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं मिलते हैं।

बहु पु॰ अकारान्त संज्ञा-शब्द –ा प्रत्यय के साथ मिलते हैं, यथा हीरा १९

बहु स्त्री॰ के प्रत्ययुक्त प्रयोग नहीं मिलते हैं।

संज्ञा : कर्ता (विकृत)

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : कर्म (मूल)

एक पु अथवा स्त्री॰संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में नहीं मिलते हैं।

एक पु॰ अकारान्त संज्ञा शब्द –ु प्रत्यय के साथ मिलते हैं कन्मणु १९

एक॰स्त्री॰ के कोई उदाहरण नहीं है।

बहु स्त्री संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं मातु १७

बहु॰ पु॰ के उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : कर्म (विकृत) :

एक॰ पु अथवा स्त्री के कोई उदाहरण नहीं है।

बहु॰ पु॰ –ु प्रत्यय के साथ मिलता है पगु १९

बहु॰स्त्री – प्रत्यय के साथ मिलता है मोटीं १९

I : करण :

प्रत्ययहीन रूप नहीं है।

एक० पु० में दो प्रत्यय मिलते हैं –ए तथा –एं जिनमें से दूसरा प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का एका०न्त का प्रयम है।

–ए — मुहुं १५

–एं — एणेषवि ११

एक० स्त्री० में –हि प्रत्यय मिलता है कंदुपदिसहि ११

बहु० पु० अथवा स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं है।

II : संप्रदान :

एक० पु० अथवा स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं है।

बहु० पु० में –ह प्रत्यय मिलता है टीहा १५

स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं है।

III : अपादान :

एक० पु० में –ई प्रत्यय मिलता है पाणई १८

IV : संबंध :

प्रत्ययहीन समासिक रूप मिलते हैं

एक०।बहु० पु०।स्त्री० अहरा पाडु १५, अंधेय संमाडु १७ कंप्पु विम्वहि १७
वंद सहाणा १६, टेसि पुनु १५

एक० पु० में –हि तथा –केरा मिलते हैं

–हि का प्रयोग एक संबंधी के साथ हुआ है संसाहि जोगहीह संगई १७

–केरा का प्रयोग बहु० संबंधी में –हि प्रत्यय लगा कर किया गया है
पापरेहि केरा पहिरणु १७

एक० स्त्री० के उदाहरण नहीं है।

बहु० पु० में –ई प्रत्यय प्रयुक्त मिलता है इसमें संबंधी भी बहु० है
अरगांन्दे हीआ १५

बहु० स्त्री० के उदाहरण नहीं है।

V : अधिकरण :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं है।

एक० पु० अकारान्त शब्द –ि –उ तथा –ए प्रत्यय के साथ मिलते हैं

–ि — वंदि ११ अंगि १७

–उ — पाराउ १८

–ए — पाडु १५

एक० स्त्री० के उदाहरण नहीं हैं।

बहु० पु०। स्त्री० रूप –हि प्रत्यय के साथ मिलते हैं

मणिहिं ११ कणहिं १७ विपुलहिं १७

संज्ञा : संबोधन :

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

एक० पु० में –ु प्रत्यय के साथ मिलते हैं टेल्हिपुतु १५

स्त्री तथा बहु० के कोई उदाहरण न प्रत्ययहीन प्रयोगों के हैं और न प्रत्यय युक्त के।

सर्वनाम शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष :

कोई उदाहरण नहीं है।

सर्वनाम द्वितीय पुरुष

केवल दो उदाहरण मिलते हैं जो कर्ता० (मूल) के हैं और प्रत्ययहीन हैं

कर्ता (मूल) एक पु० तुहुं १५, तुहुं १५

सर्वनाम : तृतीय पुरुष [तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम एवं संकेतवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन प्रयोग कोई नहीं है।

प्रत्ययमुक्त प्रयोग विभिन्न कारकों में निम्नलिखित हैं

–ो कर्ता० (मूल) कर्म० (मूल) एक पु। स्त्री० जो १६, सो १६, सो १७

– कर्म० (विकृत) बहु० पु० ते १७

–ें कर्म० (विकृत) बहु पु० में १५

–सु संबंध० एक स्त्री० तसु १८

करण संप्रदान अपादान अधिकरण और संबोधन कारकों के उदाहरण नहीं है।

सर्वनाम : संबंधवाचक [तथा संबंधवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन रूप नहीं है।

प्रत्ययमुक्त रूपों की स्थिति इस प्रकार है

–ो सर्व कर्म (मूल) तथा वि एक पु० [जो?] १६, जो ११

पो १७ पो १७

– वि बहु पु० में १७

सर्वनाम : प्रश्नवाचक [तथा प्रश्नवाचक विशेषण] :

कोई उदाहरण नहीं है।

सर्वनाम : [तथा निजवाचक विशेषण]।

कोई उदाहरण नहीं है।

विशेषण शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

[विशे]षण :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं —

एक०।बहु० पु०।स्त्री० केह १५, दुइ १६, पर १५, सब १७

प्रत्ययुक्त प्रयोग निम्नलिखित हैं

–ु एक०।बहु० पु० एकु १५, छउ १६

[–ु प्रत्यय अकारान्त विशेषण शब्दों में लगता है, जो विशेष्य के प्रत्ययुक्त होने पर, स्वतः विशेष्य के रूप में अथवा विशेष्य के अन्तर आते हैं।]

–ा एक०पु० केहा १५, तेहा १५, बडा १५, [क]हुप १६, दिसा १६, मता १६ बेरंगा १७ एहा १६ मुहावा १८

–ी एक०स्त्री० पलानी १६ एही १८

[यह –ी अकारान्त/आकारान्त विशेषण शब्दों में लगा है]

–ा बहु०पु० सघाणा १५, एहा १६ तेहा १६ इतरा १८ मंडा १८

–ें बहु० पु० (विकृत) आपूपारें १७

[इस प्रत्यय का उपयोग विशेषण के विकृत रूप-निर्माण के लिए किया गया है।]

क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

[क्रि]या : सामान्य वर्तमान :

–अहि उ०पु० मांगहि १५, जाय[हि] १५

–अइ प्र०पु० एक०पु०।स्त्री० मिग्गइ १५, सोहइ १६ मोहइ १६, पावइ १८, पर॰ १८ मोहइ १८ चाहइ १८

–अहि प्र०पु० बहु०पु० मोहहिं १६ बीमहि १७ उपीमहि १७

–अ प्र० पु० बहु० पु० पर १८

[क्रि]या : संभावनार्थ वर्तमान :

–उ उ०पु० एक पु० केहु १५, वेहु १५

–ग्गइ । –एग्गइ प्र० पु० एक० पु० बमिग्गइ १५, दिक्ख॰ १५ मोहियाउ १६

क्रिया : सामान्य भूत और भूत कृदन्त

–उ प्र०पु० एक० पु० सामान्य भूत हू १५

–ओ वही वही हो १७

–ए प्र पु० बहु० पु० सामान्य भूत परे १६

[सामान्यभूत अक०क्रियाओं में वचन और लिंग कर्ता के अनुसार तथा सक० के कर्म के अनुसार है।]

क्रिया : सामान्य भविष्यत् :

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त :

—म एक० बहु० मस १८ मक १८

—इ एक० बहु० [नि] हाकि ११ करि ११ गहि
निहाकि १७ गहि १८ गहि १८ निहाकि

क्रिया : वर्तमान कृदन्त :

—अति पु० पु० एक स्त्री पहरति १८ पावति १२

—अंत पु० पु बहु० पु मस्तंतह १५

क्रिया भविष्यत् कृदन्त :

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : विधि

—उ द्वि पु एक०पु० बेहु १८

क्रियार्थक संज्ञा :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

अव्यय : स्थान सूचक :

—ु पसु १५

अव्यय : स्थिति सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : कार्यप्रणाली सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : संयोजक :

— नं १७ नं १७

अव्यय : निषेध सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : निश्चय सूचक :

—ु मपनु ११

इ पोरइ १७

नि पनकेचनि ११

हिं : पापरहिं १७

तु तु १८

अव्यय : संबोधन सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : परिमाण सूचक

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : प्रश्नसूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

पंचम सत्र-रीति

संज्ञा शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

संज्ञा कर्ता कारक (मूल)

एक०पु०/स्त्री० विभिन्न स्वरान्त संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

पु० वेग १९, वेस १९ अम्बजस २० रवि २ टीका २१ टीका २२

पात २२, कुच २४ पांता २५, कोह २६ मुहलवि २६

स्त्री० टीका २२ मोह २६, काठीवेटी २६ पदवि २७

एक०पु० अकारान्त संज्ञा शब्द —ा—उ प्रत्यय के साथ मिलते हैं

—ु माकणु २१ वापु २१ मृगमु २१ हार २४ हार २४

मनहार २४ चमहर २४ हार २५, जमु २५, मांकणु २६

उमाणु २५ मामु २६ चमु २६ उवेमु २७ मोन १७

—उ जालउ २१ वामउ २१ ठेरउ २४

एक०स्त्री संज्ञा शब्दों के कोई प्रत्यय युक्त रूप नहीं है।

बहु०पु० संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप म मिलते हैं

लगण २२ हिन्डुल २० पान २२ पुरीतुन २१

बहु०पु० संज्ञा शब्द — तथा—े प्रत्ययों के साथ भी मिलते हैं

— जमु २६ मुखामु १०

—े तरण २० तारे २० तारे २१

बहु०स्त्री० ईकारान्त शब्द — प्रत्यय के साथ मिलते हैं

भवही २१ बरसाई २५

संज्ञा : कर्ता (विकृत)

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा : कर्म० (मूल)

एक०पु०/स्त्री० विभिन्न स्वरान्त संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप मे मिलते हैं

पु० दान १९, मठप २२ पतार २१ बाम २३

स्त्री गौतरनी १० टीका २१ बद्धि २२ जोन्ह २३

एक पु० अकारान्त संज्ञा शब्द — उ प्रत्यय के साथ मिलते

—ु अरणमु २४ जामु २६ मनु २६

—उ सोना बासउ २१

एक॰स्त्री॰ के प्रत्ययमुक्त और बहु॰ के कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : कर्म (विकृत)

प्रत्ययहीन रूप के कोई उदाहरण नहीं मिलते हैं।

एक पु॰ सज्ञा शब्द —हि प्रत्यय के साथ मिलते हैं

मनचाहि २१

एक॰स्त्री के कोई प्रयोग नहीं हैं।

बहु॰ पु॰ अकारान्त शब्द प्रत्यय मुक्त है

बनवारी २२

बहु स्त्री सज्ञा शब्द — प्रत्यय के साथ मिलते हैं

चंदहाईं २५

संज्ञा : करण :

प्रत्ययहीन रूप में कोई उदाहरण नहीं मिलते हैं।

एक॰ पु स्त्री॰ में — प्रत्यय मिलता है

राहं २ काहि २८

बहु॰पु॰।स्त्री॰ का कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा संप्रदान :

कोई उदाहरण नही है।

संज्ञा : अपादान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा-संबंध

प्रत्ययहीन सामासिक प्रयोग इस प्रकार मिलते हैं

एक॰।बहु॰ पु॰।स्त्री॰ कांडा [वे]हव २१ काठी बेंटी २५,फुवीपुत २२ बघुअरणीं २१ निकाळी छरिसी २१ मुहसवि २२, मुहसवि बोका २२, सरग बळम २५, मुहसवि २१

कभी-कभी समास एक॰ संबंधी को —ु युक्त करके बनाए गए हैं

एक घुघु तटीमनु २४

एक संबंधी के साथ एक॰।बहु॰ पु॰।स्त्री॰ में–हि प्रत्यय मिलता है:

एक॰पु॰ चांदहि ऊपर २१ पांवहि जाव २५, वेतहि मौलु २७

बहु॰स्त्री॰ चांदहि चंदहाईं २५

एक॰संबंधी के साथ एक पु॰ में —ेर।—रउ प्रत्यय मिलते हैं

ेर मूतेर हाव २५, नौजेर चांदहि २५, अंबेर उजाळु २५

रउ मूतेरउ हाव २४

एक॰ संबंधी के साथ बहु॰पु॰ में –र तथा –रे प्रत्यय मिलते हैं
–र ठाकर पात २२
–रे छोह रे पात २२
एक॰ संबंधी के साथ एक॰स्त्री॰ में –केरि प्रत्यय का प्रयोग हुआ है
[पै]हुल केरि छोह २५
बहु॰ संबंधी के साथ एक॰पु॰ में –न्ह अथवा –न्हु प्रत्यय लगा कर 'केरउ' अथवा 'कर' का प्रयोग हुआ है
–न्ह तै(वे?)हेनु बापन्हु केर्ड २० हाथन्हु अवहार २४
–न्हु केरउ बउडिन्हु केरउ उबेगु २७
–न्हु कर तरीअन्हु कर हार २४
एक॰ संबंधी के साथ बहु॰स्त्री॰ में –करी प्रयुक्त मिलता है
बाम्ह करी धप् बरषी २१

संज्ञा : अधिकरण
एक॰ पु॰स्त्री॰ दोनों में ही प्रत्ययहीन रूप मिलते हैं
पु॰ मथ २०
स्त्री॰ आंट २२
बहु॰ दोनों के प्रत्ययहीन उदाहरण नहीं हैं।
एक पु॰ में तीन प्रत्यय मिलते हैं
अकारान्त में –ि म्हाथवि २०
अकारान्त में –ें आगें १९ कमहरु आगें २४ राउलें २०
„ : – गलेहि २१ ओवरे २४
एक॰ पु॰स्त्री॰ में –हि । हि प्रत्यय मिलता है
काठहि २१ अजयहि २५
एक॰ पु॰स्त्री॰ में – प्रत्यय मिलता है
वेगें २० ओलगें २२ दिवें २५
एक॰ पु॰ में –ंहि प्रत्यय मिलता है
–ंहि आर्यहि २५
बहु॰पु॰स्त्री॰ में –न्हु प्रत्यय मिलता है
–न्हु पाअन्हु २२ गोरन्हु २४ नयन्हु २४

संज्ञा : संबोधन
एक॰ पु॰ में प्रत्ययहीन प्रयोग मिलते हैं
बाबर २१ बर्बर २१ बर्बर २१
एक॰स्त्री॰ के प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं है।
एक पु॰ में –ू, –े तथा –ो प्रत्यय युक्त प्रयोग मिलते हैं
–ू राउ १९

–े   पेठे १९

–ो   पंडिरो १९ पंडिरो २२, पंडिरो २४ पंडिरो २६

बहु० के कोई उदाहरण न प्रत्ययहीन के हैं और न प्रत्ययुक्त के।

सर्वनाम शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं हैं।

प्रत्ययुक्त के केवल दो कारकों के उदाहरण मिलते हैं

–हि   कर्म० एक० पु   मोहि २१

–रे   संबंध० बहु पु   अम्हारे २

सर्वनाम : द्वितीय पुरुष :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं

कर्ता (मूल) एक० पु   तु १९, तू २१

प्रत्ययुक्त केवल दो उदाहरण मिलते हैं

–ई   करण० एक०पु   तई १९, तई १९

सर्वनाम तृतीय पुरुष [और अनिश्चयवाचक सर्वनाम तथा संकेतवाचक विशेषण]:

प्रत्ययहीन प्रयोग इस प्रकार हैं

कर्म (मूल) एक० स्त्री०   एह २१

कर्म० (विकृत) एक०पु   स १९ एह २१ आन २१

प्रत्ययुक्त प्रयोगों की स्थिति विभिन्न कारकों में इस प्रकार है

–ो   कर्ता (मूल)।कर्म (मूल)एक०पु०।स्त्री०   सो २१ सो २४ सो २७ सो २७

–न   कर्ता० (मूल) बहु०स्त्री   ताहि २१

–े   कर्म० (विकृत) दि० बहु०पु०।स्त्री०   ते१९, ते२० ते २५

–रउ   संबंध एक०पु०   तारउ २१

–रे   „   तारे २७

('तारउ' के स्थान पर 'तारे' का प्रयोग संबंधवान के विकृत रूप में होने के कारण किया गया लगता है।)

–रि   संबंध० एक स्त्री०   तारि २१

–ही   „   ताही २५

सर्वनाम संबंधकारक। [तथा संबंध वाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं:—

विशेषण एक०स्त्री०   ज २० ज २१

प्रत्ययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है:

–ो   सर्व कर्म० (मूल) एक पु०   जो २४

– वि० बहु० स्त्री० ज २५

सर्वनाम : प्रश्नवाचक [तथा प्रश्नवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित है

वि० एक० पु० का २४

कर्ता० (मूल) एक०स्त्री० काहु २१

प्रत्यययुक्त प्रयोग नहीं है।

सर्वनाम : निजवाचक [तथा निजवाचक विशेषण]:

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं है।

प्रत्यययुक्त केवल एक प्रयोग मिलता है

–नी सम्ब०वि०एक०स्त्री० आपनी २२

विशेषण शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विशेषण :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित है —

एक०।बहु० पु०।स्त्री० एक २० कौन १९, दिठ २७ ना २२, पा (पा)च २१ वि २९ सब २९ साथ २० सँपूरी २१ सिन्दूही २१

प्रत्यययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है

–उ एक० पु० सहमउ २४ अहमउ २५, नन्दि [उ] २५

[उ प्रत्यय ऐसे अकारान्त पुल्लिंग विशेषण शब्दों में लगा है जो प्रत्यययुक्त विशेष्य के साथ स्वतः विशेष्य की भाँति अथवा विशेष्य के अनन्तर प्रयुक्त हुए हैं।]

–आ एक० पु० केन्हा २२

–ो " " साम्हा २१ बड़सी २७

–र स्वार्थिक एक पु० लहर १९, केहर १९, गैहर २२, ककहर २१ बहुर २७ केहर २७

–ी एक०।स्त्री० नीली २१ बड़ी २७

[–ी प्रत्यय अकारान्त। आकारान्त विशेषण शब्दों में लगा है।]

–ें बहु०।पु० बहु ६७

– बहु० पु० मीड १९, रात २१

[– प्रत्यय अकारान्त आकारान्त विशेषण रूपों में लगा है।]

– बहु० पु०।स्त्री० पर्णपता २१ नी २१ बड़मी २१, जठी २१

क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

क्रिया : सामान्य वर्तमान :

—असि	द्वि पु एक०पु०	[मो] कसि १९, मूकसि १९, मानसि १९, देखसि २१ मारसि २२, हारसि २२
—अइ	तृ पु पु०स्त्री०	[मा] चइ २२, गावइ २२ [मु]-सइ २४ बीजइ २१ पइसइ २७ दीसइ २८
— इ	तृ पु एक० पु०	मागि २७
—अथिआंथि	तृ पु बहु० पु०	मानथि ११ मूलथि २
—अ	तृ०पु बहु० पु०	फूल २

क्रिया : संभावनार्थ वर्तमान :

— अइ	द्वि०पु० एक पु०	कवइ २७
—ईअइ	तृ०पु० एक०।बहु० पु स्त्री०	कीअइ २१ हसीअइ २१ कीजइ २१ बीअइ २१
—इए	तृ०पु० बहु०पु०	मणिए २१
—अई	तृ०पु० बहु० पु०	छोड़ई २२

क्रिया : सामान्यभूत और भूत कृदन्त

— अउ	तृ० पु एक पु० सामान्यभूत	भउ २४
—इअउ	तृ०पु० एक पु० भूत कृदन्त	मिलिअउ २५
—एउ	वही	मांडेउ २८
—एल	वही	पसारेल २७
—इअल	वही	पैहिअल २५, ओढिअल २१
—इआ	वही	मठिआ २१
—इले	वही	पहिले २२
—एतले	वही	बैठले २०
—ए	तृ०पु०बहु०पु० सामान्यभूत	दीठे १९, दीठे १९, तूठे २ हारे २१
—ए	वही भूत कृदन्त	रांधे २२, माते २१
—एगु	वही	बाधगु २०
—अइ	तृ०पु० एक०स्त्री० सामान्य भूत	भइ २२

[सामान्य भूत अकर्मक क्रियाओं के वचन और लिंग कर्ता के अनुसार तथा सक० के वचन और लिंग कर्म के अनुसार है।]

क्रिया : सामान्य भविष्यत् :

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त :

-इ   एक०।बहु० देखि १९, देखि २० मा[हि] २१ करि २१
देखि २४ देखि २४ सुनि २१ देखि २१ छाडि २७

-ए   एक० हुवें २१

क्रिया : वर्तमान कृदन्त :

- अतु   द्वि० पु० एक० पु० बाजतु १९

- अंत   पु० पु० बहु० पु० सराहंत २१

क्रिया भविष्यत् कृदन्त

कोई उदाहरण नहीं है।

क्रिया : विधि :

- अउ   द्वि० पु० एक० पु० ढोरउ २७

- उ   द्वि० पु० एक० पु० देखु २१ देख २१ बोल १७

क्रियार्थक संज्ञा

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्ययों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

अव्यय : स्थानसूचक :

प्रत्ययहीन   कठ १९, कठहू १९, ऊपर २१
-   ऊपरें २०

अव्यय : काल सूचक

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय रीति सूचक

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : कार्यप्रणाली सूचक :

-   एव २२ एव २१
-   [illegible] २० [illegible] १ [illegible] २१ [illegible] २७

अव्यय : संयोजक :

प्रत्ययहीन   न २७
-   अनु २१ अनु २२ अनु २७
-ं   अंग २० अंग १५
-ा   जा २०

अव्यय निषेधसूचक :

प्रत्ययहीन   न २१ न २४

अव्यय : निश्चय सूचक :

हि   हि २१

इ   सावइ २०

जु   जु २१

हाहु   हु १८ हु २० हु २१

ए   सीए २४

अव्यय : संबोधन सूचक :

रे   एक०   रे १८, रे १८, रे २१ रे २१ रे २१ रे २२
रे २१

अरे   एक०   अरे २१ अर २१

अव्यय : परिमाण सूचक :

प्रत्ययहीन   अति २६

–ु   बिनु २२

अव्यय : प्रश्न सूचक :

प्रत्ययहीन किकी   की १८, कि २७

षष्ठ शब्द-विवेचन

संज्ञा शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

संज्ञा : कर्ताकारक (मूल)

एक० पु०स्त्री० विभिन्न स्वरान्त संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

पु०   कवि १९, कवि ४० फूल १८, विहु[बन?]४ सोहर १२

स्त्री०   जवाल ४२, बीज १२ रति ४४ जाति ४१ बानबी १६
बुधि ३१ सोहु ४१

एक पु० अकारान्त और अकारान्त संज्ञा शब्द क्रमशः –ु और –उ प्रत्ययों के साथ भी मिलते हैं

–ु   पनु २८, कामदेउ २८, निलाडु २९, बानु २९, भा [डु]
१ नाहु ११ कामदेउ १२ बांसु १४ मीनु १४ मांसु
१८ हार १९, संसार १९, वेमु ४१ आकाशु ४२,
निवासु ४२, वेमु ४२

–उ   सोलहडु २१ मोतिमउ १०

बहु पु० स्त्री० विभिन्न स्वरांत संज्ञा शब्द भी प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

पु०   चार १९, बाहिनम १४ मंगल कलस १७

स्त्री०   नयन बाल १७ भउंह १०

बहु० पु० अकारान्त संज्ञा शब्द –ा प्रत्यय के साथ भी मिलते हैं
काटा १२ हिया १४ कहा ८०
बहु० स्त्री० संज्ञा शब्द प्रत्ययुक्त रूप में नहीं हैं।

संज्ञा कर्ता विकृत रूप :
प्रत्ययहीन प्रयोग एक ही है
एक० पु० काम्ह ११
एक० पु० अकारान्त संज्ञा शब्द –ई प्रत्यय के साथ मिलते हैं
–ई काम्हदेवइ ४०
बहु० पु० अकारान्त संज्ञा शब्द भी –ई प्रत्यय के साथ मिलते हैं
–इ मीठइ ३५
स्त्री० एक० अथवा बहु० संज्ञा शब्दों के कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : कर्म (मूल)
एक० पु० संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में नहीं हैं।
एक० स्त्री० संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं
छाप ४४ गंभराद १८ बांह ४० गांम ३६ माम ४३ मोह ३५, मोह १८, मोह ३६, मोह ४० मोह ८२ एकावनि १७ एक बावनि ४१ कांचुली ४०
एक० पु० –उ प्रत्ययों के साथ मिलते हैं
–ु धनु २८ ग्यानु २९ लगु १२ हथियारु १२ साहनु ११ चाडु ११ हरिसु ११ बोलु ३५ प [वहु] मु ३६ उरमानु ३६ सभाउ ४० एकु ४५
–उ निवारउ १८
बहु० पु० संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूपों में मिलते हैं
हथियार २८ कपोल ११ फूल १
बहु० पु० आकारान्त संज्ञा शब्द –ँ प्रत्यय के साथ मिलते हैं
टांडे ११
बहु० स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा कर्म (विकृत)
एक० पु० संज्ञा शब्द –ही प्रत्यय के साथ मिलते हैं
ग्वाही १७ मानसनि ही १७
एक० स्त्री० के कोई उदाहरण नहीं हैं।
बहु० पु० संज्ञा शब्द –ु तथा –ही प्रत्यय के साथ मिलते हैं
–ु : बन्दू ११
–ी : बनवासी १४

बहु•स्त्री• संज्ञा रूप – प्रत्यय के साथ मिलते हैं
    मधु ४५

संज्ञा करण

एक पु स्त्री संज्ञा शब्द प्रत्ययहीन रूप में नहीं है।
एक पु स्त्री• में तीन प्रत्यय मिलते हैं –ि –इं तथा –इं सहु
    –ि मइ २८
    –इं भुयइं १० ममइं ११ अमृतइं १४
    –इ सहु काजइं सहुं ४१
बहु पु• में –हि प्रत्यय मिलता है
    पायहि ४२
बहु स्त्री के कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा : सम्प्रदान :

कोई उदाहरण नहीं है।

संज्ञा अपादान

प्रत्ययहीन प्रयोगों के कोई उदाहरण नहीं हैं।
एक पु• में –अइं प्रत्यय मिलता है
    तलिअइं १५
एक स्त्री• तथा बहु• के कोई उदाहरण नहीं हैं।

संज्ञा संबंध

एक बहु• पु•स्त्री• सामासिक रूप इस प्रकार हैं
    नयन बाण १७ मंयण कलस १७ नारि मोडु १८ समुदाह जल ११
कभी-कभी समास संबंधी को उकारान्त करके बनाए गए हैं
    पंगु मोडन १७
बहु पु संबंधी के साथ एक।बहु• पु•स्त्री• में–ह प्रत्यय का प्रयोग हुआ है
    –ह छाम्हीहि आडाइं माथिहि १० छाम्हाइं पुरुह माडु ११
        मालाहं छोहर ११ तरुणाहं हिया १४ बीबी फलहु सीड १५
        पयाआहं सोहु १५ असो(अ)पल्लवहं सोहु ११ मामहं जुम
        १८ [ता]नहं भासहं राउलवेल ४१
एक पु संबंधी के साथ एक पु स्त्री में –ह प्रत्यय का प्रयोग मिलता है
    पु• कामह ११ नाहलनह गिरी ४१ कामदुमह मालवालु ४२,
        कायह मांसु ४५
    स्त्री परहु सोहु १८
एक स्त्री•सम्बन्धी के साथ –हि प्रत्यय का प्रयोग हुआ है
    सकरीहि मालिहि ११
एक•पु सम्बन्धी के साथ –ह। हि८ एक स्त्री संबंधी के साथ –हि तथा
बहु•पु संबंधी के साथ–हं लगा कर –अरह तथा –अरउ प्रत्ययों का प्रयोग

मिलता है

–करइ सोहहि करइ पाणइ १८

–करउ काम्बोवइ करउ रखापण २० आठम्भिहि करउ पा[पु] १०
मार्गिहि करउ काबु ११ पूनिर्वहि करउ पाटु ११ लाठिहि
करउ मिथासु ४२ कारडहिर करउ वमु ४३ पाटमीहि करउ
बेमु ४१ मीनीहु करउ हाथ १९

एक० पु०/स्त्री० संबंधी के साथ बिना कोई प्रत्यय लगाए और बहु०पु० संबंधी के साथ –इ प्रत्यय लगा कर एक०स्त्री० में –करी प्रत्यय का प्रयोग हुआ है

मुह करी सोम १९ कटिसरी कांचुली ४० वेसइ करी लाटि ४१

एक०/बहु० संबंधी के साथ बहु० पु० में –केरा प्रत्यय का प्रयोग मिलता है

सोना केरा चूरा १९

एक० पु० संबंधी के साथ –इ और एक०स्त्री० संबंधी के साथ –हि प्रत्यय लगा कर बहु० पु० में करा/कराइ का प्रयोग मिलता है

करा पूनिर्वहि पूनिवहि करा चांद १५,सोनाइ करा मंगल कलस १७

कराइ काम्बोवइ कराइ पगइ १८

एक०पु० संबंधी के साथ बहु०स्त्री० में –करी प्रत्यय लगा मिलता है

मानिक करी लागुलई १४

बहु०पु० संबंधी के साथ –इ तथा स्त्री०संबंधी के साथ –हि प्रत्यय लगाकर –करइ प्रत्यय लगा है

चापुडुकरइ वयर्द ११, मार्गिहि करई गुणइ १०

बहु०स्त्री०संबंधी के साथ बहु०पु० में –र प्रत्यय लगा मिलता है

मानिर फाटा १२

संज्ञा : अधिकरण :

प्रत्ययहीन मूल शब्द केवल एक० पु० में है समुदाइ मज्झ १९ मोतण १७ स्त्री० और बहु० के उदाहरण नहीं है।

एक०पु० में –इ –हिं।–ही –ं, –उ प्रत्यय मिलते हैं

–इ पाणइ ११ पाणइ १८ हियइ ४४

–हिं।–ही आंगि २५ सिरानि ११ जांघ (हि) १४ माति १८

–ं गाव ११ गाउ १८ गागु ४५

–उ पाउ ११

एक० पु०/स्त्री० में – प्रत्यय मिलता है

मह १७

बहु० पु० में –ा। तथा–हि।–ही प्रत्यय मिलते हैं

–इ कोवइ १५

–हिहो कामही १४ हायही १६, पायही ३६, कोकहि ४२, कोकहि ४४

संज्ञा : संबोधन :

एक० पु० सखा शब्द ही प्रत्ययहीन रूप में मिलते हैं

मीत २८

एक० स्त्री० और बहु० के प्रत्ययहीन अथवा प्रत्ययहीन अथवा प्रत्यय युक्त प्रयोगों के कोई उदाहरण नहीं हैं।

सर्वनाम शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

सर्वनाम प्रथम पुरुष

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं है।

प्रत्यययुक्त प्रयोग का केवल एक उदाहरण मिलता है

–नरह संबंध० बहु० स्त्री० अम्हारह २८

सर्वनाम द्वितीय पुरुष :

प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है

प्रत्ययहीन कर्म (विकृत) बहु० पु० तुम्ह ४०

–हं कर्ता० (मूलाविकृत) एक०पु० तुहं २८, तुहं ३२

–इं बहं करण० एक०पु० तइ सहुं २८

–म्हहि सरिसउ करण० बहु०पु० तुम्हहि सरिसउ ४४

[करण० के उपर्युक्त दोनों रूपों में अन्तर सामान्य और आदरात्मक रूपों का है।]

–म्हार संबंध बहु० पु० तुम्हा[रा] वेस ४०

सर्वनाम : तृतीय पुरुष [पूर्व अभिलाष वाचक सर्वनाम तथा संकेतवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं

कर्ता० (मूल) एक०स्त्री० स १५, स १६ स १८ स ४१ स ४१ स ४३

कर्म० (विकृत)वि एक० पु स्त्री० स १६, स १९ आन ४०

प्रत्ययुक्त प्रयोगों की स्थिति विभिन्न कारकों में इस प्रकार है

–ो कर्ता कर्म० (मूल) एक०पु०स्त्री० सो १ को ४१ कोइ ११ का ४५

–गह कर्ता० (मूल) बहु०पु० ताग्ह १

–न कि० एक०स्त्री० का ४०

–ु कि०स कर्ता० (मूल) एक०पु० एउ २९ आनु १८ आन ४४ एहु १० एहु ११

–इ कर्ता० (मूल) एक पु०स्त्री० कोइ ११

–ेइ कर्ता० (विकृत) एक०स्त्री० तेइं ४१ तेइं ४४

~ॆ कर्ता० (विकृत) बहु० पु० तथा स्त्री० तें ११ तें १६ तें १९, तें ४० तें ४१
~ॆ कर्म० (विकृत) बहु० पु० १९, ते११ ४०
–न्ह कर्म० (विकृत) बहु० पु० तेन्ह १४
–स सर्वंध एक० स्त्री० तास १८
–हि हि करउ " एक० पु० तहि २९, तहि करउ १५, तहि ४१
–हि करउ " " " तेहि करउ १५
–ह " एक० स्त्री० ताह ४२
–ह करी " " " ताह करी ११
–हि करी " " " ताहि करी ४२
~ें " बहु० पु० तें २९
–हं " " " मागहाह ११
–ौहि " " स्त्री० मागौहि १०
–हि अधिकरण० बहु० पु० एहि १४

सर्वनाम : संबंध वाचक [तथा संबंधवाचक विशेषण] :

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं
वि० एक० स्त्री० ज१९, ज४१ ज४१ ज४२ ज४३
प्रत्ययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है
–ो सर्व० कर्म० (मूल) एक० पु० तथा बहु० स्त्री० जो ४१ जो ४९
–ु सर्व० कर्म० (विकृत) एक पु० जसु ४१
– सर्व० कर्ता० (मूल) तथा वि० बहु पु० ज ४० ज ४२
–हि सर्व० सम्ब० बहु० स्त्री० जहि ४४

सर्वनाम : प्रश्नवाचक [तथा प्रश्नवाचक विशेषण]:

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित है
सर्व कर्ता० (मूल) एक० पु० को २८ को २८ को ४३ को ४४
" कर्म० (मूल) " " काह १२
प्रत्ययुक्त प्रयोग केवल निम्नलिखित है
~ें सर्व० कर्ता० (मूल) बहु० कें १४ कें १४

सर्वनाम : निजवाचक [तथा निजवाचक विशेषण]

प्रत्ययहीन प्रयोग नहीं है।
प्रत्ययुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है
–अन सर्व० वि० एक० पु० अप्पन ४४
–णी सर्व० " " स्त्री० अप्पणी ११

—आइ संबंध०वि० बहु० पु० आपणाइ २८

विशेषण शब्दों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

विशेषण

प्रत्ययहीन प्रयोग निम्नलिखित हैं

एक०।बहु० पु०।स्त्री० आन ४ उंच १० एह ३५, एव ४ विस ४१ सतावीस १७ सव ४० सात १८ सुवेस ४५, सुईं १० सुईं ११ तिरी ४१ माळवी २८ वाउं २८,

प्रत्ययमुक्त प्रयोगों की स्थिति निम्नलिखित है

— एक०।बहु पु० एकु २८, अवरु २८ एकु १ सुरेखु ११ एकु ११ एकु १५, आनु ४४ अवरु ४५

—उाउं एक०।बहु० पु सारिखउं २१, निसउ २१, जिसउ २१, रूरउ १ ऊंचउ १० —इसउ १० धुनउ १० ठेंवउ १ अइसउ १० रूरउ ११ अइसउ १२ तइसउ १२ अइसउ १२, रूरउ ११ जिसउ ११ अइसउ ११ नैरउ १४ सुहावउ १५, अइसउ १७ अइसउ १९, अपसारउ ९, अ [पसार] उ १९, इमउ ४०

[— ,।उ प्रत्यय का प्रयोग केवल एसे अकारान्त पु० विशेषणों के साथ हुआ है जो प्रत्ययमुक्त विशेषणों के साथ स्वतः विशेष्य की भांति अथवा विशेष्य के अनन्तर आए हैं।]

—ी एक०स्त्री० दुमयी २१, कूडी १६, इसी १७ किसी १८, इसी ४० अइसी ४२, पीरी ४१ साम्बली ४१ सिंदूरी ४१ पाटणी ४१ इसी ४५, माळवी २८

—े बहु पु करे ११

—ा बहु पु तीखा १२, कमळा १२ तरखा १२, विसा ११ भिसा १५, उभाभा १५, पईला १७ ऊंचा १७ भादुला १७ पीवा १७ जिसा १७

—ँ एक (विकृत) पु० उपइलें ओवरें १५

[इस प्रत्यय का प्रयोग विशेषण का विकृत रूप बनाने के लिए किया गया है।]

—ई।—इं एक०।बहु० पु०।स्त्री० रूडीइं १० नवई नानाई ११ सवई तरुणाई १४ एहि १४ बादुलाई ४२, ऊजळाई ४२, [सा]नई भावई ४१

[–हँ।हि का प्रयोग संबंध कारक के विशेषणों के साथ सर्वंध कारक प्रत्यय के रूप में हुआ है।]

क्रिया रूपों की स्थिति नीचे दी जाती है।

क्रिया : सामान्य वर्तमान :

–अहुँ प्र॰ पु॰ एक॰पु॰ करहउँ ११

–अइ पु॰ पु॰ एक॰पु॰।स्त्री॰ भूमइ २८ मामइ २१ मावइ २९, मावइ २९, मावइ १० मूमइ १२, मूमइ १० सजइ ११ मण्डइ १६ मावइ १७ मावइ १७ करइ १८ करइ १८ मावइ ११ बहइ ४० गहइ ४१ पावइ ४१ पाम्बइ ४२ मावइ ४२, मामइ ४५

–इ पु॰पु॰ एक॰ पु॰ मापि २९, माधि १४

–अवि न पु॰ बहु॰पु॰ मावधि १५, मावधि ३५

–अहिं त॰पु॰ बहु पु॰ पढहि १४ मा[व]हि २८ पावहि १८ मावहि ४०

क्रिया समावनार्थ वर्तमान :

–अहुँ प्र॰ पु॰ एक॰ पु॰ करहुँ ११

–अइ पु॰पु एक॰ पु॰। स्त्री॰ मावइ २८ मी [म]इ २९, हरइ ११ मावइ ४१ भूमइ ४४ भूमइ ४५, पदमइ ४५ भूमइ ४५, रूमइ ४५

क्रिया सामान्य भूत और भूत हृदन्त :

–अउ पु॰ पु॰ एक॰ पु॰ सामान्य भूत गुन्ड १४ हुमउ १६ मउ १४ लियउ ४०

–इमउ त॰ पु॰ एक॰ पु॰ सामान्य भूत कातिमउ ११ गति

–इमउ पु॰पु॰ एक॰ पु॰ : भूत हृदन्त मिघ्रतिमउ २९, बसाविमउ ११ पाविमउ ११ लियउ ११

–ईमउ पु॰पु॰ एक॰पु॰ : भूत हृदन्त बीमउ २९, बीमउ ११

–इउ पु पु॰ एक॰पु॰ भूत हृदन्त मनिउ ४२

–इउ पु॰पु॰ एक॰पु॰ सामान्य भूत मरिउ १२

–इमा पु॰पु॰ बहु पु॰ सामान्य भूत लिमा ११ पहिलिमा १९, जिमा ४२

–इयाइयाइ पु पु॰ बहु॰ पु॰ : भूत हृदन्त पहिलिमा १४ [पु]नि[मा] ४२ पहिलिमइ ४१

–ई पु॰ पु॰ एक॰ स्त्री॰ : सामान्य भूत मरही ४१ लगी । गुपी ४४

–ई पु पु॰ एक स्त्री॰ : भूत हृदन्त लागी १५, बिन्धी १६ म १० बाधी १७ पहली ४०

[सामान्य भूत अक० क्रियाओं के वचन और लिंग कर्ता के अनुसार तथा सक० कर्म के अनुसार है।]

या सामान्य भविष्यत् :

–इसी	तृ पु० एक० पु०	करिसी ३२

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त :

–अ	एक०।बहु०	देख ११ चढ़ १४ देख १९ बोड ४०
–इाई	" "	छेडि १५, आई १७
–इउ	एक ।बहु०	करिउ १६, देखिउ १० पाविउ १२, काडिउ ११ पाखिउ ११ तुलिउ १६ करिउ १६, आविउ ४५
–̃	बहु	कीएं ११

क : वर्तमान कृदन्त

–अति	तृ०पु० एक स्त्री०	आनति १
– अंतु	तृ०पु बहु० पु०	आवंतु २८
– अति	तृ पु० बहु स्त्री०	आवति ४४

क्रिया : भविष्यत् कृदन्त

–इकउ	तृ०पु० एक पु०	छोडि कउ ४०

क्रिया विधि

– अउ	तृ०पु० एक०।बहु० पु	बोलउ ४१ मरउ ४१ भणउ ४१

क्रियार्थक संज्ञा :

–अण	पु० एक० पु०	सुणण १५
–इवा	संबंध स्त्री० बहु०	अपाविवे करीं १४

अव्ययों की स्थिति नीचे दी जा रही है।

अव्यय : स्थानसूचक :

– तहं ११ तहं २८ तहं १८, तहं १८, तहं १०
–ां यहां २८
– इहं २९

अव्यय : कालसूचक :

प्रत्ययहीन जबहीं ३९
– पुन २८, पुणु १९, पुणु ४१

अव्यय स्थिति सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

अव्यय : कार्यप्रणाली सूचक :

— एवं ४०

अव्यय संयोजक

त — त १६, त १६, त ४०

पर — पर ४४

कि — कि २६, कि १८

ज — ज २८, ज १६, ज १८

जपु — जपु ११ [ज]पु १६ जपु १७

अव्यय : निषेध सूचक :

न — न १० न १४ नही ४०

—नउ — नउ १२

अव्यय : निश्चय सूचक तथा सूचक :

— नजपु ४१

हिही — हि २८ नही ४० ही ४१

इ — कोइ ११ कइ १० कइ ४०

जि — जि ११

पु — पु १० पु ११ पु ११

हुँ — मज्झुं १० पुउ १८

हु — हु २८, हु ११

ही — नही ११ जनही १६, ही ४१

अव्यय : संबोधन सूचक :

रे । अरे — एक० पु० — रे ४१ अरे ४०

हो — बहु पु० — हो ४१ हो ४१

र — एक पु — र १४ र १० र १७ र ४०

र ४२, र ४१ र ४१ र ४१

अव्यय : परिमाण सूचक :

अति — अति ४४

अव्यय : प्रश्न सूचक :

कि — कि ४१

कहा — कहा २१

[सामान्य मूत सक० क्रियाओं के वचन और लिंग प ... में स्थिति ... कर्म के अनुसार हैं।] ... रचना के अर्थों की है ... ७ की संख्या

या : सामान्य भविष्यत्

–इसी	तृ०पु० एक०पु०	करिसै	

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त

–अ	एक।बहु०	देख ११ प	प० पु० द० लगारे
		कहि १५	से १ उ० संदेश
–इाई		करिउ १०	पु० संल० ५९ ११
–इउ	एक।बहु०	११ मा	प०पु र लगारे ८७
		जाविउ २	उ० संदेश० ५४
		कीयं ११	संल ५९ १
–	बहु		

क वर्तमान कृदन्त

–अति	१०पु० एक० स्त्री		
– अतु	१०पु बहु पु०		
– अति	न पु० बहु स्त्री०		

क्रिया : भविष्यत् कृदन्त

–इकउ	तृ०पु० एक०पु०	

क्रिया : विधि

– अउ	तृ०पु एक०।बहु पु	

क्रियार्थक संज्ञा :

–अण	पु एक० पु०	
–इवा	मध्यम० स्त्री० बहु	

अव्ययों की स्थिति नीचे दी जा रही

अव्यय : स्थानसूचक :

–	तहं ११ तहं १८ तं
–ा	यहां २८
–	इउं २९

अव्यय : कालसूचक :

प्रत्ययहीन	जबही १९
–	पुन २८, पुण २

अव्यय : स्थिति सूचक :

कोई उदाहरण नहीं है।

११ (१) संज्ञा : कर्त्ताकारक (विकृत रूप)
एक० पु० प्रत्ययहीनता उ० सदेश० ५२
१४ (१) ५५ मधू० उक्ति० ५९ ११।
१५ (१) एक० पु० –इ प० ढगारे ८१ की।
बहु० पु० –इ प०द० मधु० ढगारे ८४ की।
१६ (५) संज्ञा : कर्मकारक (मूल रूप)
एक० पु० प्रत्ययहीनता प पु०द० ढगारे ८०
की ११ की उ मसाराम्य म
सदेश० ५२ ५४ मधू उक्ति०
५९ २।
१७ (१ २ ५ ६) एक०स्त्री० प्रत्ययहीनता प पू द० ढगार
८७ ८९ की १८ की। उ० सदेश०
५४ ५६ मधू उक्ति० ५९ २।
१८ (१ २,१ ४ ५,६) एक०पु० मसाराम्य म – प०द० ढगारे ८०
की उ० सदेश० ५२ मधू
१९ (५,६) उक्ति० ५९ २।
एक०पु० मसाराम्य मे –उ प द ढगारे
२० (६) ८०की उ० सदेश० ५१ मधू०
उक्ति० ५९ २।
बहु० पु० प्रत्ययहीनता प०पु०द० ढगारे
२१ (४) ८४ की उ० मसाराम्य में सदेश०
५२ मधू० उक्ति० ५९ २।
बहु०स्त्री० प्रत्ययहीनता प०पू० द० ढगारे
२२ (६) ८० ९१ की ९९ की उ० सदेश०
५४ ५६ मधू० उक्ति० ५९ २।
बहु० पु० – पु० ढगारे ८४ की मधू०
उक्ति० ५९ २।
२३ (२,५) संज्ञा : कर्मकारक (विकृत रूप)
२४ (१) एक०पु० –हि मधू० उक्ति ५९ ७।
२५ (१ ६) एक०स्त्री० –हि मधू० उक्ति० ५९ ७।
२६ (१) बहु०पु०स्त्री –निहि मधू उक्ति० ५९ ७।
२७ (५) कर पु० –न प०पू० द ढगारे ८४ की।
२८ (१ ४ ६) बहु० पु० –न (पुन मधू० –न उक्ति० ५९ २)
२९ (४ ५ ६) कर पु – – प०पू म– ढगारे ८४ की।
कर०स्त्री – मधू० उक्ति० ५९ २।

४ रचना के शब्द-रूपों की विभिन्न अपभ्रंशों में स्थिति

क्रमसंख्या के अनंतर कोष्ठकों में दी हुई संख्याएँ रचना के अंशों की हैं। १ से लेकर ६ तक की संख्याएँ रचना के छ नखशिखों की हैं, ७ की संख्या रचना के आदि-अंत की है।

संज्ञा : कर्ताकारक (मूल रूप)

१ (१२३४५६)	एक० पु०	प्रत्ययहीनता प० पू० व० तगारे ८ की ९५ की १ उ० संदेश ५२, ५५, मपू० उक्ति ५९ १।
२ (१२३४५६७)	एक स्त्री	प्रत्ययहीनता प०पू० व० तगारे ८७ की ९८ की उ० संदेश ५४ ५६ की मपू० उक्ति ५९, १
३ (१२३४५६)	एक पु	अकारान्त में — प०पू० व० तगारे ८० की मपू० उक्ति० ५९ १। उ० संदेश० ५२।
४ (३४५६)	एक पु	अकारान्त में —उ प० पू० व० तगारे ८ की उ० संदेश ५३।
५ (२३४५६)	बहु पु	प्रत्ययहीनता प पू व० तगारे ८४ ९६ की उ अकारान्त में संदेश ५२ मपू० उक्ति ५९ १।
६ (२,६)	बहु स्त्री०	प्रत्ययहीनता प पू० व तगारे ८७ ९३ की ९९ की उ अकारान्त में संदेश० ५४ मपू उक्ति ५९.१।
७ (२,५)	बहु पु० —	पू व० तगारे ८४ की ९६ की मपू उक्ति ५९.१।
८ (३५)	बहु पु	—, प पू० तगारे ८४ की।
९ (१)	बहु पु	—ा।
१० (४ ६)	बहु पु	अकारान्त में —ए प पू० व० तगारे ८४ की उ संदेश० ५३ मपू उक्ति ५९ १।
११ (३)	बहु स्त्री	ईकारान्त में —अउ प०पू० तगारे ८-७।
१२ (५)	बहु स्त्री० —	मपू० उक्ति० ५९ १।

४८ (१५) एक०/बहु० पु०/स्त्री० —उ मप्र० उक्ति० ५९.४।
४९ (१) एक० पु० —उं प० तगारे ८३वीं ११ वीं ३।
५०–५१ (५) एक० पु० —र —रउ।
५२ (५) एक० पु० केरउ प० द० तगारे १०३।
५३ (५) एक० पु० कर मप्र० उक्ति० ५९.४।
५४ (६) एक० पु० करइ (तुल० कर मप्र० उक्ति० ५९.४)
५५ (६) एक० पु० करउ (तुल० करमप्र० उक्ति० ५९.४)
५६ (६) एक० पु० करई (तुल० कर मप्र० उक्ति० ५९.४)
५७ (२) एक स्त्री० —इंचि—इंची।
५८ (३) एक० स्त्री० —ची।
५९ (५६) एक० पु० स्त्री० —़।
६० (५) एक० स्त्री० केरि प० द० तगारे १०३।
६१ (६) एक० स्त्री० करी मप्र० उक्ति० ५९.४
६२ (६,६) बहु० पु० —र।
६३–६४ (६) बहु० पु० करा/कराह (तुल० करमप्र० उक्ति० ५९.४)
६५ (५) बहु० पु० —रे।
६६ (५६) बहु० स्त्री० करी मप्र० उक्ति० ५९.४।
६७ (३) बहु० स्त्री० —हि (तुल प० — हिं तगारे ११वीं) मप्र० उक्ति० ५९.७।

संज्ञा : अविकरण कारक

६८ (१२,१३,६,६) एक०पु० / स्त्री० प्रत्ययहीनता उ० गरेन० ५१ और ५३ ५४ मप्र० अकारान्त उक्ति० ५९.५।
६९ (१६,६) एक० /बहु०पु० / स्त्री० — मप्र० उक्ति० ५९.५।
७० (५) एक पु० / स्त्री० —हिं० पु० द तगारे ८२वीं ८३ ११ वीं ११ वीं ४ १८ वीं उ० गरेन० स्त्री० ३ इकारान्त में ५६ मप्र० उक्ति ५९.७।
७१ (१३६) एक० पु० अकारान्त —ए प० द० तगारे ८५वीं उ० गरेन० ५४।
७२ (१६) एक० पु० —़।
७३ (२४,६) एक० पु० —ि।—ी प० द० अकारान्त म तगारे ८२ वीं उ० गरेन० ५० ५४ ५५ मप्र० उक्ति ५९.५।

संज्ञा : करण कारक

१ (१७) एक० पु० —ँ प पु० तमारे ८१ वी ९ वी १, मपू० उक्ति० ५९. १।

११ (४) एक० पु० —ं।

१२ (४) एक०पु० अकारान्त में —ेन प०पु०द० तमारे ८१वी उ० संदेश० ५२।

१३ (५) एक०पु०स्त्री० — मपू० इकारान्त में उक्ति० ५९ १।

१४-१५ (१) एक०पु० अकारान्त में —ई। मई प० तमारे ८१ वी।

१६ (१) एक०पु० —ई सइं (तुल० मपू०—सउ उक्ति १ १)।

१७ (४) एक०स्त्री —हिं उ० संदेस ५४ ५६ मपू उक्ति० ५९ १ ५९ ७।

१८ (१) बहु०पु० —हिं प० द० तमारे ८५वी ९६वी उ संदेस० ५२ मपू० उक्ति० ५९. १ ५९.७।

संज्ञा : संप्रदान कारक

१९ (४) बहु०पु० —ं।

संज्ञा : अपादान कारक

२० (४) एक० पु० —ई (तुल०प० करण० —ई तमारे ८१ वी)।

२१ (१) एक० पु मई।

संज्ञा : संबंध कारक

४२ (१३४५,६) एक बहु० पु स्त्री (अ) समास प्राचीन तथा मध्य भारतीय आर्य भाषा से आगत।

(आ) प्रत्ययहीनता प०पु०द० तमारे ८३वी ८६वी ८७, ९८वी उ० संदेस० ५१ वी १ ५४ ५५।

४३ (२,४६७) एक०बहु पु स्त्री —ह प० तमारे ८३ वी ८६ वी ८७ ९१ ९३ वी ३ ९५ वी ३ ९६ वी।

४४ (४६) एक०बहु पु० केरा प०द तमारे १ ३।

४५ (२,४५,६) एक०पु०स्त्री० —हिवी प द० तमारे ८३ वी ८७ ९१वी ९८ वी उ० संदेस० ५१ प, ५६।

४६ (०) एक पु —इ।

४७ (३६) एक पु स्त्री —ह प०पु द० तमारे ८३वी ८७ ९१ ९६ वी १, ९८वी उ संदेस० ५१ प, ५२, ५४।

सर्वनाम द्वितीय पुरुष

९३ (४५) कर्त्ता० (मूल) एक पु० प्रत्ययहीनता तू। तू (तुल० मधू०तु उक्ति० ६६ २)।
९४ (१) कर्त्ता०(मूल) एक०पु० -इ तुइ प०र० तगारे १२० वीं।
९५ (२) कर्म० (विकृत) एक०स्त्री० -ही तही मधू उक्ति० ६६ २।
९६ (१) कर्म० (विकृत) बहु०पु० प्रत्ययहीनता तुम्ह प० तगारे १२० वीं मधू० उक्ति० ६६ २।
९७ (५) करण० एक० पु० -ई तई प० तगारे १२० वीं मधू० उक्ति० ६६ २।
९८ (१) करण० एक० पु० -ईमइ तइमइं
९९ (२) करण०एक०स्त्री० -तवि तुगवि।
१०० (१) करण०बहु०पु० -हिं गरिगउ तुम्हहिं गरिगउ (तुल० गरिगउ-उ० सदेश ७१)।
१०१ (२) सबंध० एक०पु० -ो तों पु० तगारे १२० वीं।
१०२ (१) सबंध० बहु पु० -रा तुम्हारा।

सर्वनाम : तृतीय पुरुष तथा अनिश्चय वाचक

१०३ (१) सर्व०कर्त्ता (मूल) एक०स्त्री० -इस (तुल प इसि तगारे १२५ तथा उ०इसि सदेश० ५८)।
१०४ (११४५,६७) सर्व०कर्त्ता।कर्म (मूलाविकृत) एक०पु० स्त्री० ते सो प पु०र० सो तगारे १२१ ए, उ० उ०मदेश० ५८ व मधू उक्ति ६६ १।
१०५ (२६,६) सर्व कर्त्ता० (मूल) एक पु० स्त्री को (तुल० उ० प्राकृतपाद का सदेश० ५९ ए, तथा मधू० उक्ति० ६६ ६)।
१०६ (१) सर्व कर्त्ता० (मूल) एक पु० कोऊ -उक्ति ६६ ७।
१०७ (१) वही पु०कर्त्ता०–द का उ० सदेश० ५ वीं।
१०८ (२) सर्व कर्त्ता०(मूल)।कर्म(विकृत)एक०पु०स्त्री० -ते ते पु० तगारे १२१ ए।
१०९ (११) सर्व०कर्त्ता (मूल) अथवा नि० एक पु० -मधू (तुल० प०र०मधू उक्ति० ११०)।
११० (१७) वही एक व० तगारे १२४ ए उ० सदेश० ५८।

७४ (२) एक० पु० —हि हि स० उक्ति० ५२।

७५ (२६७) : एक पु० —ँ पु० उभारे ८२ की मपु० उ ५६ ५।

७६ (१) एक पु० —इं प० उभारे ८२ की।

७७ (१५) एक० पु० —े प० पु० व उभारे ८२ की की ४ मपु० उक्ति० ५६. ५।

७८ (४१) एक पु० —व।

७९ (१३४६१) बहु० पु स्त्री० —हिंहीं प० उभारे ८५ की ६१ और, ६६ की ६६ की मपु० की ५६ ७।

८० (५) बहु पु० स्त्री० —हु मपु० उक्ति ५८

८१ (१) बहु० पु प्रत्ययहीनता उ उक्ति० ५२, ५५ म उक्ति० ५६ ५।

८२ (४) बहु० पु —हु।

८३ (२) बहु० पु० अकारान्त में —हिं प० उभारे की स० उक्ति० ५२।

सत्ता : संबोधन कारक

८४ (२,६,६) एक पु०। स्त्री० प्रत्ययहीनता प० पु इ० उभारे की ८० ८६ की ६५ की १ ६८। उ अकारान्त में उक्ति० ५२ मपु० उक्ति ६२।

८५ (१४) एक पु० अकारान्त में —ु प उभारे ८ की

८६ (५) एक० पु० —ु।

८७ (२) एक पु० — —।

८८ (५) एक पु० —े।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष

८९ (१५) कर्म० (विकृत) एक०पु० —हि हि मोहि। मोहि मपु० उक्ति० ६६ १।

९० (१) संबंध बहु०पु० —अउं अम्हाअउं।

९१ (५) संबंध०बहु०पु० —अम्हारे (तुल०मपु० अम्हार —उक्ति ६६ १)।

९२ (६) संबंध बहु०स्त्री —ारद अम्हारद (तुल० मपु अम्हार उक्ति० ६६ १)।

सर्वनाम द्वितीय पुरुष

९३ (४५) कर्ता० (मूल) एक० पु० अन्यदर्शनतां तू । तू
(तुल० मधु०नु उक्ति १६ २) ।

९४ (१) कर्ता (मूल) एक०पु० –हुं तुहुं प०द० नमारे
१२ वीं ।

९५ (२) कर्म० (विकृत) एक०स्त्री० –ही तोही मधु
उक्ति० १६ २।

९६ (१) कर्म० (विकृत) बहु०पु० अपभ्रंशमिता तुम्ह प०
हमारे १२० वीं मधु० उक्ति० ११ २।

९७ (५) करण० एक० पु० –ई तइं प० हमारे १२०
वीं मधु० उक्ति० १६ २ ।

९८ (१) करण० एक० पु० –इमइं तइमइं

९० (७) करण एक स्त्री० –सवि तुसवि ।

१०० (१) करण०बहु०पु० –हिं मलिगउ तुम्हहिं मलिगउ
(तुल० मलिगउ-उ संदेश० ७१) ।

१०१ (३) संबंध० एक०पु० –े ता पु० हमारे १२०वीं।

१०२ (१) संबंध० बहु० पु० –आण तुम्हाण ।

सर्वनाम तृतीय पुरुष तथा अनिश्चय वाचक

१०३ (१) सम०कर्ता०मूल एक०स्त्री० –अ (तुल उ०हमि
हमारे १२५ तथा उ०हमि संदेश ५८)।

१०४ (११४५,१७) सर्व कर्ता/कर्म (मूल/विकृत) एक०पु० स्त्री० ते
सो व पु०द० सो हमारे १२१ ए उ०
उ संदेश ५८ अ मधु उक्ति० ११ १ ।

१०५ (२५,६) सर्व० कर्ता० (मूल) एक पु०। सो वो
(तुल० उ० रत्नाकर का संदेश० ५० तु,
तथा मधु० उक्ति० ११ ६)।

१०६ (१) सर्व० कर्ता० (मूल) एक०पु० कोइ –उक्ति०
११ ७ ।

१०७ (१) वहीं पु०बहु०–ए वाद उ नहर ५० वीं।

१०८ (२) सर्व कर्ता (मूल) । कर्म(विकृत)एक०पु०स्त्री०
– ते पु हमारे १२१ ए ।

१०९ (११) स्त्री०कर्ता० (मूल) अन्यत्र वि० एक०पु० –
मधु (तुल० प०ए०बहु ग्रन्थ ११०)।

११० (१७) वही नह प० हमारे १२४ तथा संदेश० ५८ ।

७४ (२) एक० पु० —हिं हि उ० संदेश० ५२।
७५ (२,५,७) : एक पु० —ँ पु० उपरि ८२ की मधु० उक्ति० ५६ ५।
७६ (१) एक० पु० —ई प उपरि ८२ की।
७७ (१५) एक० पु० —ै प० पु० व उपरि ८२ की ६५ की ४ मधु० उक्ति० ५६. ५।
७८ (४१) एक० पु० —उ।
७९ (११४५,६) बहु० पु०।स्त्री० —हिंहीं प० उपरि ८५ की ८७, ६१ और, ६६ की ६६ की मधु० उक्ति ५६ ७।
८० (५) बहु पु० स्त्री० —नु मधु० उक्ति० ५८।
८१ (१) बहु० पु० प्रत्ययहीनता उ० संदेश० ५२, ५५ मधु० उक्ति० ५६ ५।
८२ (४) बहु पु —हुं।
८३ (२) बहु० पु० अकारान्त में —हिं प० उपरि ८५ की उ० संदेश० ५२।

संज्ञा संबोधन कारक

८४ (२,५,६) एक०पु०। स्त्री० प्रत्ययहीनता प०पु०व० उपरि ८० की ८७ ८६ की ६५ की १ ६८ की उ अकारान्त में संदेश० ५२ मधु० उक्ति० ६२।
८५ (१४) एक० पु० अकारान्त में — प० उपरि ८०की।
८६ (५) एक पु० —।
८७ (२) एक० पु० —ै।
८८ (५) एक पु० —ो।

सर्वनाम : प्रथम पुरुष

८९ (१५) कर्म० (विकृत) एक०पु० —हिं हिं मोहिं। मोहि मधु० उक्ति० ६६ १।
९ (१) संबंध० बहु०पु० —अउं अम्हाअउं।
९१ (५) संबंध बहु०पु० —अम्हारे (तुल०मधु० अम्हार—उक्ति० ६६ १)।
९२ (६) संबंध०बहु स्त्री० —रइ अम्हारइ (तुल० मधु० अम्हार उक्ति० ६६ १)।

सर्वनाम द्वितीय पुरुष

९३ (४५) कर्ता० (मूल) एक० पु० अपभ्रंश [illegible]
(तुल० मनु० उक्ति ११ ७) ।

९४ (१) कर्ता०(मूल) एक०पु० —[illegible] [illegible] [illegible]
१२० की ।

५ (२) कर्ता (तिर्यक) एक०स्त्रा० —[illegible] [illegible] मनु०
उक्ति० ११ ७।

९६ (१) कर्म० (तिर्यक) बहु०पु० अपभ्रंश [illegible]
समारे १२० की मनु उक्ति० ११ ७।

९७ (५) करण० एक० पु० —[illegible] [illegible] [illegible]
की मनु० उक्ति० ११ ७ ।

९८ (१) करण० एक० पु० —[illegible] [illegible]

९९ (२) करण एक०स्त्री —[illegible] [illegible] ।

१०० (१) करण बहु०पु० —[illegible] [illegible] [illegible]
(तुल [illegible]–उ० [illegible] ७१) ।

१०१ (२) संबंध एक०पु —[illegible] [illegible] [illegible] ।

१०२ (१) संबंध० बहु० पु० —[illegible] [illegible] ।

सर्वनाम : तृतीय पुरुष तथा अनिश्चय वाचक

१०३ (१) सर्व०कर्ता०मूल [illegible]
समारे १२५ [illegible]

१०४ (१ १ ४ ५,१ ७) सर्व कर्ताकर्म (मूल/तिर्यक) [illegible]
मा ५०७०६ [illegible]
उ०मनु० ५८ [illegible]

१०५ (२,५,१) सर्व कर्म [illegible]
([illegible])
[illegible]

१०६ (१) सर्व [illegible]
११ ७

१०७ (१) [illegible]

१०८ (७) [illegible]
[illegible] सी०

१ ९ (११) [illegible] पू१
[illegible]

११० (१७) [illegible]

१११ (१६) सर्व० कर्ता० (मूल) तथा वि०एक० । बहु०पु०—पहु
प०पू०द० तगारे १२४ए उ० संदेश० ५८अ।
११२ (५) सर्व० कर्ता० (मूल) कर्म० (विकृत) बहु०स्त्री —न्ह जा।
११३ (१४) वही सा प० तगारे १२३ ए६ उ० संदेश० ५८ ए।
११४ (६) वही मा।
११५ (५,६) सर्व० कर्ता० (मूल) एक०स्त्री अत्ययहीनता स प०
तगारे १२३ ए ६।
११६ (५) वही एहु प० द० तगारे १२४ ए ३ उ० संदेश ५८ए।
११७ (६) सर्व कर्ता० (विकृत) एक०स्त्री —ई तेई मपू०
उक्ति० ६६ ३।
११८ (२६) सर्व कर्ता० (मूल) बहु० पु० —न्ह तान्ह।
११९ (४५,६) सर्व कर्ता० (मूल) कर्म० (विकृत) तथा वि०बहु पु०।
स्त्री —ं —ते प०द तगारे १२३ ए ५
प० संदेश० ५८ ए मपू०उक्ति० ६६ ३।
१२० (६) सर्व कर्ता० (विकृत) बहु०स्त्री० —ँ तेँ प० तगारे
१२३ ए ५।
१२१ (५६) सर्व०कर्म० (विकृत) वि०एक पु स्त्री० अत्ययहीनता अ०
पू० पु० तगारे १२३ ए ४।
१२२ (१५६) वही आगः (तुल० प पू द० अन्य तगारे ११०)।
१२३ (१) सर्व०कर्म (विकृत) एक०स्त्री० —हि ताहि मपू०
उक्ति० ६६ ३।
१२४ (६) सर्व कर्म० (विकृत) बहु० —न्ह तेन्ह।
१२५ (१) सर्व०कर्म० (विकृत) बहु पु० —हिं तानहिं (तुल० संज्ञा
कर्म० (विकृत) —हि मपू० उक्ति० ५६.२)।
१२६ (२४) सर्व०कर्म० (विकृत) तथा वि० बहु० पु० —ँ तें।
१२७ (२) सर्व करण० एक० पु० —ँहुआ तेँहुआ।
१२८ (२) सर्व० करण० बहु० पु० —ँहुवे तेँहुवे।
१२९ (५) सर्व संबंध० एक पु० —रउ तारउ।
१३० (५) सर्व० संबंध० एक० पु० —रे तारे।
१३१ (५) सर्व० संबंध० एक० पु० —रि तारि।
१३२ (५) सर्व संबंध० एक०स्त्री० —री तारी।
१३३ (६) सर्व० संबंध० एक पु० —हि ताहि प० तगारे १२३ ए ४।
१३४ (६) वही —हि करउ ताहि करउ।
१३५ (६) वही —हि करइ तेहि करइ।
१३६ (६) सर्व०संबंध० एक०स्त्री० —ह ताह प० तगारे १२३ ए६।

१३७. (१) वही –हि करी तहि करी ।
१३८ (१) वही –हि करी तहि करी ।
१३९ (११) सर्व०संबं०एक०स्त्री० – तासु तास । तासु द० तगारे १२१ ए १ (गुज०अ०तस्स तथा तसु मरेपा० ५८ क)।
१४० (४) वही – सु तसु प० तगारे १२१ ए १।
१४१ (१) सर्व०संबं० एक०स्त्री –तरि तारि: मजू० उक्ति० ६६ १ ।
१४२ (१) गत मध्य०बहु पु० – न ।
१४३ (१) मध्य०मध्य०बहु पु० –हइ माग्हाई।
१४४ (१) मध्य०मध्य बहु स्त्री० –ोंहि माम्हीदि ।
१४५. (१) सर्व० अधि० बहु० पु –हि एहि (गुज बहु०स्त्री प० तगारे १२४ ए१ १२५ ए१)

सर्वनाम : संबंधवाचक [तथा सहसंबंधवाचक विशेषण]

१४६ (५,६) सर्व० तथा वि० एक० पुं०स्त्री० प्रत्ययहीनता ज ।
१४७ (११) वि एक० पु०स्त्री० –ज जा प०द स्त्रीलिंग– तगारे १२६ ए २ ।
१४८ (१२,१४ ५,६७) मध्य०कर्म (मूल) ।गम (मूल) तथा वि० एक० पु०। स्त्री –ा जां प०पू०द पु० में तगारे १२६ ए १ उ०गोम्ने०५८वीं मजू० उक्ति०६६ म
१४९. (११) मध्य०कर्म (विकृत) एक०पु० –गुजगु ज मरेपा० ५८ बी।
१५० (२) वि मध्य०स्त्री० – ज
१५१ (४५,६) सर्व कर्म०(मूल)तथा वि० क०० पु०।स्त्री० –ज प० द० तगारे १२६ ए १ मजू० उक्ति० ६६५।
१५२ (१) गत मध्य० बहु० स्त्री० –हि जहि ।
१५३ (११) सर्व० अधि ।वि० एक० पु० –हि जहि प० द० तगारे १२६ ए १।

सर्वनाम : प्रश्नवाचक [तथा प्रश्नवाचक विशेषण]

१५४ (२५,६) सर्व० कर्म० (मूल) । सर्व० (मूल) एक पु०।स्त्री० प्रत्ययहीनता का प पू द तगारे १२७ ए१ उ० मरेपा०५९ ए मजू० उक्ति० ६६५।
१५५ (१) सर्व०कर्म० (मूल) एक पु० का।

१५६ (११) सर्व कर्म (मूल) एक० पु० प्रत्ययहीनता काई प०द० मपू० तगारे १२७ ए १।

१५७ (५) सर्व कर्ता० (मूल) एक०पु — काहु।

१५८ (२) वि० एक० पु —ा का।

१५९ (१) सर्व करण० एक पु —ँ कें (तुल० केइं मपू० उक्ति० ६६६)।

१६० (१) सर्व०संबंध एक० स्त्री०—सु कासु प पू द० तगारे १२७ ए १।

१६१ (१) यही —सुतणी कासुतणी प०द० तगारे १०४।

सर्वनाम निजवाचक [तथा निजवाचक विशेषण]

१६२ (७) सर्व०संबंध एक पु —नु आपणु (तुल० आपणु कें हु मपू० उक्ति० ६६ ८)।

१६३ (६) सर्व संबंध० तथा वि एक०पु —अह आपणह (तुल मपू आपण उक्ति ६६८)

१६४ (५,६) सर्व संबंध तथा वि एक स्त्री —ी आपणी मपू० उक्ति० ६६ ८।

१६५ (६) सर्व संबंध० तथा वि०बहु०पु —आह आपणाह।

गुणवाचक विशेषण

१६६ (१२,३४५,६) एक०।बहु० पु०।स्त्री० प्रत्ययहीनता मपू उक्ति ६४।

१६७ (६,७) एक।बहु पु।स्त्री० —इं।—हि विशेष्य का कारक-प्रत्यय।

१६८ (१२३४५,६) एक०।बहु पु० —, मपू० उक्ति ६४।

१६९ (११५,६) एक।बहु पु —आउ।

१७० (४६) एक।बहु पु (विकृत)—ँ मपू उक्ति० ६४।

१७१ (२४५) एक० पु ा।

१७२ (५) एक० पु —े।

१७३ (५) एक पु० —र।

१७४ (१२,३४५,६७) एक। स्त्री० —ी मपू० उक्ति ६४।

१७५ (१५) बहु पु०।स्त्री — मपू उक्ति० ६४।

१७६ (५,६) बहु पु० — मपू० उक्ति ६४।

१७७ (१४६) बहु पु० —ा।

क्रिया : सामान्य वर्तमान काल
प्र० पु० एक० पु —अइ (तुल० प० पु एक०
—अइ तथा प० द्वि० —अइ तगारे ११६ की)।
१७८ (१) द्वि० पु० एक० पु० —असि प पु० नमारे ११६
की उ० सदेश० ६ मग० उक्ति० ७१।
१७९ (२५) द्वि० पु० एक० पु० —अहि प० द० तगारे ११६
की उ० सदेश० ६७।
१८० (४) तृ० पु० एक० बहु पु० —अ मग० एक०
१८१ (४५) उक्ति० ७१।
१८२ (१२३४५६७) तृ० पु एक० पु० स्त्री० —अइ प० पु० द०
तगार ११६ की उ० सदेश० १२ मग० उक्ति०
७१।
तृ पु एक० पु० स्त्री० — इ आदि मग०
१८३ (३५६) उक्ति० ७१।
तृ० पु० एक स्त्री० —अति मग० उक्ति ७१।
१८४ (१) तृ० पु० बहु० पु स्त्री —अहि प० तगारे ११६
१८५ (२,३४६) की (तुल० द० —अहि(अहीं) उ० सदेश० ६७
तृ० पु० बहु० पु० —अैंति (तुल० — अंति
प द तगार ११६की)।
१८६ (१४६) तृ० पु० बहु० पु० —उ
१८७ (२) क्रिया तत्कालभावी वर्तमानकाल
प्र० पु एक० पु० —अउ (तुल० सामान्य
१८८ (६) वर्त —अउ प पु० तगारे ११६ की)।
द्वि पु० एक० पु —अउ।
१८९ (४) तृ० पु० एक० पु० स्त्री० —अइ (तुल० सामान्य
१९० (१२५६) वर्त० —अ प० पु द० तगारे ११६ की।
तृ० पु० एक० बहु० पु० स्त्री —इउन
(तुल —— तगारे १४१)।
१९१ (४) वही रूप द तगारे १४१ उ सदेश ७१।
वही रूप (तुल०—— मग उक्ति० ७७)।
१९२ (४) तृ० पु० बहु पु० —अ।
१९३ (१५) तृ० पु बहु० पु० —अइ (तुल सामान्य वर्त० —
१९४ (२) अन्त प० द० तगारे ११६की)।
१९५ (३५) तृ० पु बहु० पु० —इउ।

१९६ (५)

क्रिया सामान्यभूत काल [और भूत कृदन्त]

१९० (१) पु० पु एक पु० भूत कृदन्त —अउ उ सदेश० १७।

१९८ (१५,१) पु पु एक० पु० भूत कृदन्त —इअउ प पू उमारे
१४८ वीं उ० सदेश० १७।

१९९ (५१) पु० पु० एक० पु० सामान्यभूत —अउ उ सदेश १७।

२ (५,१) पु पु० एक पु० भूतकृदन्त —इअउ प० पू० उमारे
१४८ वीं स०सदेश० १७।

२०१ (११) पु० पु० एक० पु भूतकृदन्त —ईनउ।

२०२ (४) पु० पु० एक० पु सामान्यभूत —ऊ।

२०३ (४) उ० पु एक० पु सामान्यभूत —ओ।

२०४ (५) पु पु एक० पु कृदन्त —एउ।

२ ५ (५) पु० पु० एक० पु० भूतकृदन्त —एल।

२ ६ (५) पु० पु० एक० पु भूतकृदन्त —इअल।

२ ७ (५) पु पु० एक पु भूतकृदन्त —इआ (तुल पु०इअव।
उमारे १४८ वीं)।

२ ८ (५) पु पु० एक पु भूतकृदन्त —इये।

२०९ (५) वही —एउले।

२१ (६) पु० पु० एक० पु० भूतकृदन्त —इउ प०इ० उमारे
१४८ वीं (तुल० उ पूर्वकालिक—इउ सदेस०
६८)।

२११ (६) पु० पु० एक० पु० सामान्यभूत —इउ प इ० उमारे
१४८ वीं (तुल उ० पूर्वकालिक —इउ
सदेस० ६८)।

२१२ (२) पु०पु भूतकृदन्त बहु०पु० —इअ प पू इ उमारे
१४८वीं उ०सदेश०१७ मपू० उक्ति० ७५।

२१३ (४५) पु० पु बहु पु० सामान्यभूत —ए मपू० उक्ति० ७५।

२१४ (५) पु पु० बहु पु० भूत कृदन्त —ए मपू० उक्ति ७५।

२१५ (५) पु० पु० बहु० पु भूतकृदन्त —एहु।

२१६ (६) पु० पु बहु पु० सामान्यभूत —इआ (तुल०पु० इअअ
उमारे १४८ वीं)।

२१७ (६) पु० पु० बहु० पु० भूतकृदन्त —इआ।इआह (तुल०पु०

इमअ तमारे १४८)।

२१८ (१) तृ॰ पु॰ एक॰ स्त्री॰ सामान्यभूत –ई प॰ पू॰ तमारे १४८बी, उ॰ संदेस॰ ६७ मपू॰ उक्ति॰ ७५।

२१९ (२,११७) तृ॰ पु॰ एक॰ स्त्री॰ भूतकृदन्त –ई प॰ पू॰ तमारे १४८बी उ॰ संदेस॰ ६७ मपू॰ उक्ति॰ ७५।

२२० (५) तृ॰ पु॰ एक॰ स्त्री॰ सामान्यभूत –अइ उ॰ संदेस॰ ६७, मपू॰ उक्ति॰ ७५।

क्रिया : सामान्य भविष्यत् काल

२२१ (१) तृ॰ पु एक॰ पु॰ –इसी (तुल॰ प॰—इसइ तमारे ११९ बी)।

क्रिया : पूर्वकालिक कृदन्त

२२२ (२४१) एक बहु॰ – अ मपू॰ उक्ति ८०।

२२३ (४५,१) एक॰ बहु॰ – इ प पू॰ द॰ तमारे १५१बी; उ॰ संदेस॰ ६८ मपू॰ उक्ति॰ ८०।

२२४ (१) वही –ई पू॰ तमारे १५१बी

२२५ (१५,१) एक॰ बहु॰ —ं मपू॰ उक्ति॰ ८२।

२२६ (१) एक॰ बहु॰ –इउ प॰ तमारे १५१बी; उ संदेस॰ ६८।

क्रिया वर्तमान कृदन्त

२२७ (२१५) द्वि॰ पु॰ एक॰ पु॰ स्त्री॰ –अतु। मपू॰ उक्ति ७८ ८०।

२२८ (२७) तृ॰ पु॰ एक॰ पु॰ – अत मपू॰ उक्ति ८१।

२२९ (४१) तृ॰ पु॰ एक॰ स्त्री॰ –अति मपू॰ उक्ति ८१।

२३० (१) तृ॰ पु एक॰ पु॰ –अंतु प॰ तगारे १४७ए उ॰ संदेस॰ ६४ (तुल॰ मपू उक्ति॰ ७८)।

२३१ (१५) तृ॰ पु॰ बहु॰ पु॰ – अंत प॰ पू द॰ तगारे १४७ए उ॰ संदेस ६४ मपू॰ उक्ति॰ ७८ ८०।

२३२ (४) तृ॰ पु॰ बहु॰ पु॰ –अट।

२३३ (१) तृ॰ पु॰ बहु स्त्री॰ –अंति प पू द॰ तगारे १४७ए, उ॰ संदेस॰ ६४।

क्रिया : भविष्यत् कृदन्त

२३४ (१) तृ॰ पु एक॰ पु –इ बा।

क्रिया : विधि

२३५. (२,१५,१) द्वि० पु० स्त्री०पु० एक०माधु०पु० —अह प०इ० तगारे १३८ बी प० पु०पु० में संदेश० ६१, मपू० उक्ति० ७४।

२३६. (१४५) द्वि० पु०स्त्री०पु०एक०पु० —उ प०पु०म० तगारे ११८ बी उ० द्वि०पु० में संदेश० ६१; मपू उक्ति० ७४।

क्रियार्थक संज्ञा

२३७. (१) एक पु० —अण प पू० तगारे १५० बी; उ०संदेश ६१; मपू उक्ति० ८१।

२३८. (२) एक० पु० —एवउ प०इ तगारे १४९ बी, उ एव्वउ संदेश० ७०।

२३९. (१) एक० पु० —इवा ।

अव्यय स्थानसूचक

२४० (५) एथ,अपर,अपरं प्रत्ययहीनता ।

२४१ (२,१४) एथु,तेथु —, प०इ० तगारे १५१ बी; मपू० एथु उक्ति ६८।

२४२ (११७) जहँ तहँ उ० तहँ संदेश०७४।

२४३ (१) इहाँ —ाँ मपू० उक्ति० ६८।

२४४ (१) इव :— ।

अव्यय : कालसूचक

२४५ (१) जब प्रत्ययहीनता मपू० : उक्ति० ६८ ।

२४६ (१) तं — प० संदेश० ७४।

२४७ (१) पुणु —, (तुल कार्यप्रणाली सूचक पुणु : प०पू०४ : तगारे १५१ बी) उ० संदेश० ७४ मपू उक्ति० ८१ ।

अव्यय : स्थिति सूचक

२४८ (१) पर प्रत्ययहीनता प संदेश ७४ ।

अव्यय कार्यप्रणाली सूचक ।

एवं – संस्कृत तत्समता
२४९ (५,९) कइसे —े (तुल० मपू० कैसें उक्ति० ६८) ।
२५० (५) जेम्व तेम्व – क प० ह० जेम जेवं तेम
२५१ (७) तेवं ठगारे १५३ सी; उ० जेम तेम मरेश० ७४; मपू० जेम तेंम उक्ति० ६८ ।

अव्यय : संयोजक

पर प्रायमहीमना उ० मरेश० ७४
मपू उक्ति० ८९
२५२ (६) फि " मपू० उक्ति० ८९ ।
२५३ (१) ज त "
२५४ (५,६) ज – उ० मरेश० ७४
२५५ (१) जं – (तुल० प ह० ज: ठगारे १५३ सी –
२५६ (४) उ० जं मरेश० ७४) ।
जमु सउमउ – प० जमु ठगारे १५३ सी –
२५७ (२५,६) उ मरेश० ७४
प० ठगारे १५४ ।
जमु –
२५८ (१) जो –ो ।
२५९ (१५) जवि –वि प० ठगारे १५३ सी
२६० (५) जउ ।
२६१ (१)

अव्यय निषेधसूचक

न । प प्रायमहीमना न प० पू० ह० में ठगारे
२६२ (१५६) १५३ सी; न तथा ण उ० में मरेश० ७४;
न मपू० में उक्ति० ८० ।

नहीं ।
२६३ (६) नउ –उ पू० ठगारे १५३ सी
६४ (१६) ना –ा ।
.६५ (१)

अव्यय : निश्चय एवं दृढ़तासूचक

हि ही प्रायमहीमना मपू० उक्ति० ८९
२६६ (५,६) ए प्रायमहीमना ।
२६७ (५)
२६८ (११४५१) इ प्रायमहीमना पू० ठगारे १५३ सी उ० मरेश०
७४, मपू० उक्ति० ८९ ।

२६९ (४) मि प्रत्ययहीनता।
२७० (४५,६) दु प्रत्ययहीनता।
२७१ (४६) –हिाही (तुल० मपू० –हिं उक्ति० ८९)।
२७२ (११६) अउं (तुल० मपू० –उ उक्ति० ८९)।
२७३ (२) उव (वही)।
२७४ (२४६) –॰ (तुल० मपू०–उ उक्ति० ८९)।
२७५ (६) इं। इं
२७६ (११६) इं प० ह० तगारे १५३डी।
२७७ (२) निव प्रत्ययहीनता (तुल० मिव प ह० तगारे १५३ डी) व संदेश० ७४।
२७८ (२,६) मीगि प० ह० तगारे १५३ डी।

अव्यय : संबोधन सूचक

२७९ (५,६) एक० पु० रे प्रत्ययहीनता प्राचीन भारतीय आर्य भाषा से प्राप्त तगारे १५५।
२८० (६) एक० पु० र प० तगारे १५५।
२८१ (५,६) एक० पु० अरे प्रत्ययहीनता प०पू ह तगारे १५५ मपू० उक्ति० ८९।
२८२ (६) बहु० पु० हो प्रत्ययहीनता।

अव्यय : परिमाणसूचक

२८३–२८४ (११६) अति भुट् प्रत्ययहीनता।
२८५ (१) मधु, मधु –॰।
२८६ (१५) मिव् –॰ प०पू ह० तगारे १५३डी।

अव्यय प्रश्न सूचक

२८७ (१२५,६) कि प्रत्ययहीनता मपू० उक्ति० ६६.६।
२८८ (५) की ,, वही
२८९ (६) कहा –। ।

५ रचना का समग्र भाषात्मक रूप

ऊपर के अध्ययन को देखने से ज्ञात हुआ कि कुल २८९ शब्द-रूप रचना में आते हैं। इनमें से १२ विवादग्रस्त हैं। विवादग्रस्तों के संबंध में ऊपर कहा गया है कि दोनों विवेचन-ग्रंथों हमारे संक्षिप्त० तथा उचित० में उनके विवेचन में विस्तार-वैषम्य है। इसी प्रकार ७८ रूप ऐसे हैं जो उक्त दोनों ग्रंथों में नहीं मिलते हैं। इन १२+७८ =९० रूपों को निकाल देने पर विभिन्न अपभ्रंशों और मौलिक भाषाओं के रूपों की स्थिति रचना में निम्नलिखित है —

कुल	प०	पू०	द०	उ०	मपू०
१९९	१०९	५९	७१	७५	१११

अतः स्थूल रूप से कहा जा सकता है कि रचना में सर्वाधिक बाहुल्य प० तथा मपू० के रूपों का है।

विभिन्न अंशों में इन रूपों की स्थिति निम्नलिखित है —

अंश	कुल रूप	प०	पू	द०	उ०	मपू०
१	१२	१०	१४	१७	१७	२०
२	४०	३७	१	२१	२६	२८
३	५०	१८	२२	२८	२५	२७
४	४२	११	१६	२६	२६	२६
५	७६	४५	३१	१८	१४	५७
६	१२०	७१	४२	४८	५३	६९
७	१८	१०	७	५	८	१०
योग	३७४	२४१	१५१	१८५	१८९	२१७

इस विवरण से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है कि प० तथा मपू० के रूपों का अनुपात रचना में समस्त रूप से बराबर समान किन्तु अन्यों की अपेक्षा अधिक है। प० के रूपों का बाहुल्य इसलिए भी हो सकता था कि वह एक सर्वमान्य साहित्यिक माध्यम बन गई थी। मपू० की यह स्थिति नहीं थी। वह एक प्रादेशिक भाषा मात्र थी। इसलिए उसके रूपों के आधिक्य का एक मात्र कारण यही ज्ञात होता है कि रचना मपू० के किसी क्षेत्र में की गई और वहीं की भाषा को रचना की आधारभूत भाषा के रूप में ग्रहण किया गया। केवल विभिन्न नायिकाओं में रोचकता लाने के लिए नायिकाओं की प्रादेशिकता के अनुसार तत्तद् प्रदेशों की प्रादेशिक भाषाओं के रूप भी रख दिए गए। एक बात यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि मपू० के अन्तर्गत अपने आप [illegible]

न प० में पाए गए हैं और न उन अपभ्रंशों में जिनके क्षेत्रों से विभिन्न नखशिखों की नायिकाएँ आई हैं।

प्रथम नखशिख के प्राप्त अंशों में नायिका अथवा उसके प्रदेश का नाम नहीं आता है। इसमें विभिन्न अपभ्रंशों में प्राप्त व्याकरण-रूपों का योग क्रमशः है मपू० २० प० १९ द० १७ उ० १७ पू० १४। इसके जो व्याकरण-रूप किसी अपभ्रंश में नहीं मिलते हैं, वे निम्नलिखित हैं

संज्ञा कर्ता० (मूल) बहु पु० —ा
संज्ञा अधि० एक० पु० —ं
गुण० वि एक बहु पु० — उ। ऊ

ये रूप कदाचित् वर्णित नायिका की मौखिक भाषा से लिए गए हैं। — ा और — उ। ऊ प्रत्यय पश्चिमी हिन्दी के हैं, इसलिए इस नखशिख की नायिका पश्चिमी हिन्दी प्रदेश की ज्ञात होती है।

द्वितीय नखशिख के प्राप्त अंशों में भी नायिका अथवा उसके प्रदेश का नाम नहीं आता है। इसमें आये हुए विभिन्न अपभ्रंशों के व्याकरण-रूपों का योग क्रमशः है मपू० २८ प० २७ द० २१ उ २१ पू १९। इसमें आए हुए निम्नलिखित व्याकरण-रूप ऐसे हैं जो किसी अपभ्रंश में नहीं मिलते हैं

संज्ञा संबंध०एक०स्त्री०	(—हे) चि (—ई) ची
सर्व० द्वि० पु करण एक स्त्री तुम चि	(—स) चि।
सर्व०कर्म(विकृत) तथा वि० बहु० पु० कें	—ं।
सर्व० तृ० पु० करण एक पु० तेंहुना	(—ंहु) ना।
सर्व० तृ० पु करण० बहु० पु० तेंहुनें	(—ंहु) नें।
संबंधवाचक वि० एक० स्त्री जे	—।
प्रश्नवाचक वि० एक० स्त्री० का	—ा।
क्रिया सामान्य वर्त० तृ० पु० बहु पु०	—उ।
क्रिया समाप० वर्त० तृ०पु बहु० पु०	—ए।
क्रिया सामान्य भवि तृ पु एक० पु०	—ई।

इनमें आए हुए प्रत्यय — चा और उसके विभिन्न रूपों से तथा प्रश्नवाचक वि०एक०पु० का से यह प्रकट है कि नखशिख की भाषा मराठी का ही कोई पुराना रूप है। *अपने दक्षिणी अपभ्रंश के निरूपण का आधार डॉ० तगारे ने ऐसी अपभ्रंश रचनाओं* को बनाया है जो महाराष्ट्र प्रदेश में रची गयी थीं और ये रूप उन रचनाओं में नहीं आते हैं इसलिए यह प्रकट है कि तृतीय नखशिख की रचना में कवि ने तत्कालीन मौखिक मराठी की सहायता ली है।

तृतीय नखशिख के भी प्राप्त अंशों में नायिका अथवा उसके प्रदेश का नाम नहीं

है। इसमें आने वाले विभिन्न अपभ्रंशों के व्याकरण-रूपों का योग क्रमशः है प० १८ द० २८, मपू० २७ उ० २५, पू० २२। तृतीय नखशिख के ऐसे व्याकरण-रूप जो इनमें नहीं आते हैं निम्नलिखित हैं —

संज्ञा कर्ता० (मूल) बहु० पु०		–उं ।
संज्ञा संबंध० एक० स्त्री०		–णी ।
सर्व० प्र० पु० संबंध० बहु० पु०	अम्हाणउं	–णउं ।
सर्व० तृ० पु० कर्म (विकृत) बहु० पु०	आनहि	–हि ।
निषेध सूचक अव्यय	ना	–न ।

– णी तथा –णउं प्रत्ययों से यह भाषा पुरानी पश्चिमी राजस्थानी तथा गुजराती के निकट दिखाई पड़ती है। प० में ये रूप नहीं मिलते हैं इसलिए ऐसा ज्ञात होता है कि तृतीय नखशिख में कवि ने तत्कालीन लौकिक पुरानी पश्चिमी राजस्थानी और गुजराती के रूपों का पुट देने का प्रयास किया है।

चतुर्थ नखशिख का विषय एक टक्किणी नायिका है जो उ० अपभ्रंश क्षेत्र की है। इसमें प्राप्त व्याकरण-रूपों का योग क्रमशः है प० ११ मपू० २९ द० २९ उ० २९ पू० १९। इस से यह दर्शनीय है कि प० के अनंतर उ० का योग द० तथा मपू० के बराबर ही है।

पंचम नखशिख का विषय एक गौड़ी नायिका है जो पू० अपभ्रंश क्षेत्र की है। किन्तु इस नखशिख में विभिन्न अपभ्रंशों के व्याकरण-रूपों का योग क्रमशः है मपू० ५७ प० ४६, द० १८ उ० १४ पू० ११। इस नखशिख में यह दर्शनीय है कि पू० के रूपों का योग सबसे कम है और सबसे अधिक योग मपू० के रूपों का है।

षष्ठ नखशिख की नायिकाएं मालवी हैं। इस नखशिख में विभिन्न अपभ्रंशों में पाये जाने वाले व्याकरण-रूपों का योग क्रमशः है प० ७१ मपू० ६६, उ० ५१ द० ४९, पू० ४१। मालवा की अपभ्रंश को उपर्युक्त विभाजन में डॉ० तगारे के आधार पर प० के अंतर्गत रखा गया है किन्तु यहाँ भी मपू० के रूपों का योग प० के लगभग बराबर ही है यह दर्शनीय है।

आदि-अंत में विभिन्न अपभ्रंशों के रूपों का योग क्रमशः है मपू० १० प० १० उ० ८ पू० ७ द० ६, जिससे यह संभावना और भी स्पष्ट हो जाती है कि कवि ने रचना की सामान्य भाषा के लिए मपू० के किसी रूप को चुना था।

ऊपर हमने देखा है कि शिलालेख भाग में गद्य हुआ बताया जाता है और यहाँ हम देखते हैं कि रचना मपू० के किसी रूप में प्रस्तुत की गई है। हमने यह भी देखा है कि रचना के भौगोलिक तत्त्व उसको दक्षिण कोशल से जोड़ते हैं और यहाँ हम देखते हैं कि विभिन्न प्रदेशों की नायिकाओं का नखशिख वर्णन करने में उक्त प्रदेशों की बोलियों का व्यवहार अपनी सीमित जानकारी भर करते हुए जहाँ कवि को अभ्यस्तता होती है वह मपू० तथा प० के रूपों का प्रयोग बहुलता से करता है। पंचम और षष्ठ नखशिख

इसके सबसे स्पष्ट उदाहरण हैं। प॰ के रूपों का अधिकता से मिलना इस कारण भी संभव है कि यह एक व्यापक साहित्यिक माध्यम के रूप में प्रयुक्त होने लग गई थी। किन्तु मपू॰ प्राय: मौखिक भाषा के रूप में ही प्रयुक्त हो रही थी। इसलिये मपू॰ के रूपों का इतनी ही बहुतायत से मिलना जितनी बहुतायत से प॰ के मिलते हैं यह प्रमाणित करता है कि रचना और संभवतः रचयिता का मपू॰ से अधिक निकट का संबन्ध था। फलतः रचना मुख्यतः दक्षिण कोसल की ज्ञात होती है, जो वर्णित दो नायिकाओं के मालवी होने तथा कदाचित् धार के राजकुल से उनके संबंधित होने के कारण कभी धार में उत्कीर्ण करके किसी भवन में लगाई गई। इसके विपरीत यदि यह रचना मुख्यतः मालवा में निर्मित की गई होती तो इसमें मपू॰ को इतनी प्रमुखता न प्राप्त होती जितनी उसको हुई है।

इस प्रसंग में यह भी दर्शनीय है कि रचयिता की असाधारण सहानुभूति ही नहीं एक प्रकार से उसका पक्षपात भी मालवी नायिकाओं के साथ है जिनका नखशिख वह सबसे अधिक बढ़ा-चढ़ा कर चित्रकांड की १८ पंक्तियों में करता है जब कि शेष प्रदेशों की नायिकाओं के नखशिखों का औसत उसके तिहाई से भी कम केवल ५ पंक्तियों में। हो सकता है कि इसीलिए और भी यह काव्य धार में उत्कीर्ण करा कर किसी मंदिर में लगाया गया हो।

फलतः प्रस्तुत लेखक का मत है कि रचना सामान्य रूप से दक्षिण कोसली में रची गई थी जिसमें नायिकाओं की प्रादेशिकता के अनुसार उनकी मौखिक बोलियों के कुछ तत्त्व रक्खे गए थे। रचना का आदि-अंत दक्षिण कोसली में है और नायिकाओं में क्रमशः पश्चिमी हिन्दी मराठी पुरानी पश्चिमी राजस्थानी अथवा गुजराती दक्खिनी पीढ़ी तथा मालवी के तत्त्व हैं, यही रचना का स्पष्ट भाषात्मक रूप है, जिसकी ओर उसके रचयिता ने

[ग] तई भासई बहुसी भामी। (४६)

कह कर संकेत किया है।

—

राउलवेल
(पाठ)

[१][1][ॐ] नमः शिव (पे) [म्य ॥]
रोहे (हें) राजन बेल बराबा(री) ।
बर – – – इ मारणु न [नी ॥]
का (को) जन्म जाणइ सो तम्म बखाणइ ।
हासे (सें) तोहे (सें) राजइ राणइ ॥

– – – – – – – – – – – – – [।] – – – – – – [२] मा[न]उ भावइ ॥
कोविन्हि कारन तरुतउ बीअइ । [का]छउ पुछउ चलु– – बइ ॥
महुव संबोतें मधु मधु रातउ । तोह बेइ करि आन [– – – [॥]
– – – – – – – – – – – – – – [।] – [३] पुन – त सम्महो मोहुंनि ॥
काला काठी चलइ सुहावइ । जासु कि – – ई तावरि [पा] वइ ॥
एहर तवनिहुँ मारनु माउड । बंधनु कमइ सो – – – – – – – – [॥]
– – – – – – – – – – – – – – [।] – – [४] सो ता – मोहीमइ ॥
रासरु कबमा कवि पुड बांपर । पारउ बापउ – – – इ कोपउ ॥
–पुरो पहिरनु भालउ भावइ । तासु सीह कि कपरा पोष [इ ॥]
– – – – – – – – – – – – – – [।] – – – – – – [न] [५] नु मनु – – ॥
बिन आहुरनें को पापेन्हु सोह । माम बनो तहं मीहि कमि करेह ॥
भइ[सी] पेरिया का भव भावइ । ताहि कि पुलिम्ब [तोज पोवइ ॥

[॥ • ॥ • ॥ • ॥]

– – – – – – – – – – – – – – [।] – [६] हुं बेतन [न?] – च बैतनि ॥
वनिमहि बाव निमहि न वानिम्ब । ते वासनु को – – सो (?) वानिम्ब ॥
– महि बांनु वें विसरल कूर्मे । कउड तार कि छेह वें बीसलें ॥
– – – – – – – – – – – – – – [।] – – – – – का [७] तहि मेए ॥
का[नि]हि बहिनन्हं विन रस । ते को(नि)मनंन्हं मानिन मोन ॥
– – रवि काठी वांधिहि सोहइ । भोलहं को निति भार]ेव पोएइ ॥ ,
कांधिहि ता [– – – – – – – – – – [।] – – – – – – – – – – – – – – – – ना ॥
वहिह [८] वांबु वोला माउा । [का]मिनु बानु को एक बहा ॥
कानिन बाउला दउ माउा । कामिनु बालव म[व?]व बाउा ॥
हांथिहि रोउं मकम भाए । को पुनि ताल मानिन ताए ॥

---

१ कोष्ठकों में दी हुई मात्राएं शिलालेख की पंक्तियों की हैं जो इस पाठ में उनके आरम्भ में दी जा रही हैं ।

---------- पाटी माडी । जनु काले [९] ----- ली माढी ॥
पाइहि पहुसिया मिच चांपा । लोयकि आनि [क] मांडी मांपा ॥
चोरको कां[नं]दिख पुसवि वेसु । मानिक तेंहु का तो वेस ॥
का वल मच हुपि ती मेडी मांवड । तै आपुनी गन्धारिम्ब माढ [१०]इ ॥
महसी --- तरविम्ब मांडी । पातली को काउम छांडी ॥
--कवि महती राउल सो [ही] । देखत तोही मयमुर्व ⁔ मोही ॥

॥ ॥ • ॥ • ॥

पुत्रु कामीअइं का इसउ लावइ । वेसु अम्हावइं मा बउ देख [११]इ ॥
माउंवउ को राउ [ल सो] हइ । वइ मउ सो पुनु कोपकु न मोहइ ॥
उहुरउ आविहि काज [ल] दीनउ । को आवइ सो वइ मउ मानउ ॥
करडिम्ब मनु लावडिअउ कानहि । काई करेवउ सोहहि का [१२] नहि ॥
मलइ पुजूकी म[णइ ?] कांठी । कापु तणी छापुर इन डिठी ॥
लावल⁔ लावउ कापू रात[उ] । कोपु न वेसनु करइ उमातउ ॥
चनहि तो अंबउ चिम्मउ राउल । तरणा बोयल्त करइ सो बाउल ॥
बाहू [१३] डिअउ सी म्वालउ दीहउ । [म्वाल]उ माणि म लहुं बनु बापुउ ॥
[हा]थहि माडिअउ मुठ सोहहि । [वे]पु चूता बन लयकइ बाहुहि ॥
पहिरल कपहूँ पर सोहइ । राउल दीसनु तउ मन मोहइ ॥
मुणि नेउरा [१४] पी काल मुहावइ । भरी (?) रक--कामु न बावइ ॥
हंसगइ का चालति महती । सा चावर बहु राउल कहती ॥
जहि परे महती बोलर्ग नइसइ । तं पव राउल आसउं दीसइ ॥

॥ • ॥ • ॥ • ॥

[१५] वेहा वेस्तिमुपु गुडं लावहि । अ ---डु वेठ गुडं आण[हि] ॥
वेपु पएउ लो पुन वसिज्जइ । [को?] अगलइं हीमा मिज्जइ ॥
अपडा वेहु चापु को मडा । सो प्मर तेहा मोटी मडा ॥
चर सावाला डीहा किज्जइ । जं मइं [१६] पएकेवति मंडिज्जइ ॥
आंपिहि कज्जल डहुरा दिसा । को [नि]हालि करि मनमु मता ॥
कज्जडिअहि सोहहि पुर गल । म(नं)डल तंडल उहि परे⁔ आम ॥
कंठी कहि बेलाली सोहइ । एहा तेहा तउ मनु मोह [१७] इ ॥
मापूमाडें चनहि जो कंम्पू । सी समाउ अमंग ही मं --॥
[कं]चू डिम्मवहि न बव दीसहि । ते निहालि तव जरपु उमीलहि ॥
मोरइ आणि वेरंमा कंम्पू । लंजहि बोल्हहि मं लंबउं हु ॥
पहिरणु पायरहि को केरा । कट [१८] डा काडा उहि पर डेरा ॥
तुपमा सि क — इला व [हि] र पु । पालई पावउ आवइ तनु बनु ॥

एहा वेढु सुहावा टहल । माग मु संठा बहि पय वोरूल ॥
पही दक्खिणि पहतमि सोहइ । सा निहालि जनु मस म [१९] न पाहइ ॥

॥ • ॥ • ॥ • ॥

कीस रे अंडिरी राछ मु [को]ल[ति ।] राहू आपें वालगु भूलसि ॥
अंह की कतगु बेस रे कोठे । वेहर नेहुर वानसि पेठे ॥
पीड गुमापु स तई मत कीठ । तै देवि बेस लि मावसि मीठे ॥
तै(के?) [२०] हेमु वापेनु केसं च न दहिय । घोपिवली एकहु रे———सम्ब ॥
घोपहि ऊपरं आम्बमत वडसे । रवि ससि राहू पेतले बइसे ॥
तिठ्ठल फूल मम्हारे म्हासवि । तै देसि तबने छावड भूमवि ॥
पूंछे फूल तारे मम [२१] हारे । रयणिगुडी जनु गमिए तारे ॥
रे रे बर्ब्बर देसु रे मु चा[हि] । तारि निलाडी सरिसी राहु ॥
जउही मु करी देनु बर्ब्बर पडली । ताहि काम्ब करी जनु जडनी जडली ॥
मरे मरे बार्बर देमलि न टीका । चांदहि ऊपर एह [२२] भइ टीका ॥
बिनु वनवारी बज्ज भो वारलि । मुठ ससि ओलर्ग च — । भावइ ॥
कमाणु वोहुले ताडर वात । जनु तोहरं एवं तोह रे वात ॥
गूमा रांमे ह [२३] सप रे राते । मोह मुडांमुल त — — माने ॥
कांठहि मोहणु पा[ब?]लर लागु । तो लहि ममनहि एवं मेमल लागु ॥
माण सोना बालड कीमइ । मीला तरमो हुवे हु हलीजइ ॥
कंडिमा लापड मलेहि तो मूस[२४]णु । को देसि कंडिरी को न[मू?]तइ जनु ।
यमहर मामें यो हाब मुनेरड । सोहणु लगगु सए भुज डेरड ॥
वारडी बातरे यमहर वडतड । [२५] तरस कमम लिवं बांडा वडमड ॥
मुनेर हाब रंमावलि चलित [उ] । वनि मोगहि जनु गडवहि मिलिमउ । [।]
वंहिंमल वाही च चडहाईं । कोमेर बोलहि तै चडनाई ॥
आंनहि मोहणु अगर जमान । कांडी [२६] बेडी कंडिरी आन ॥
दण्डा [वं] हुरम वेरि न वोहू । मान मराहुम मुचि मोहि मनि वोहू ॥
वि जउष् मेडुरी तेलरही कीजइ । वड देनि लारड लर जब लीजइ ॥
चबमर वापर मोडिमल वडने । महलाति [२७] वोरए चमारेम बाने ॥
माहमी उवेगु को मलहिणु बेनड । चाहि को बाम न लिठ लगु लोरड । [।]
यहर बबर तेहर बाम । तारे वेर्महि मावि लि मोम ॥
माहमी भजहि च राउलें चाकर । तो जनु मा[२८]ठ मांडेड दीमइ ॥

॥ • ॥ • ॥ • ॥

पीन पुहुं पड़ु की पनु भउव कर क [रि?]
को तई लगु वई पोलइ।
व पुपु मालवी उवेतु हि मावंतु
काम्बदेउ काउं मापणाहु हुसिआर हु भूलइ।
इहां भम्हार [२९] इ तुलवी कौण करिउ चमकइ।
तहि सारिखउं कहुउ इउं भाणि एउ कि सौ[स]र।
कौंपहि ऊपरि सोवन्नहुउ दीसउ पागु तें किसउ भावइ।
बिसउ सिंदूरिअउ रत्नामणु काम्बदेवहु करउ भावइ।
मि [१०] लाडु एतु ऊरउ पुंपगाणु व साम्हु वर्ग ऊंचउ।
सो देखिउ भाउभ्मिहि करउ चाँ[पु] इसउ भावइ।
केर एहु सोहिअउ भूलउ ठेंवउ।
मजेंह हूं र हुई पु करौहि तारहीहि आवउं भांखिहि करउं पुणां
व [११] इसउ काम्ब करउ [व]णुउं वजावियउ।
निलाडि टीकें पु करे कीएं तें कामाहु अ—प—
संकरी हि भांखिहि करउ कागु पाखियउ।
ताम्हणउं पुगइं नाकु पु करउ पुरेसु।
सोहर बानमइं तणइं अन्तरिअउ [१२] अइसउ करिउ पुहुं (?) मेसु।
आंखिर पाटा तीखा अजला तरला ते बालति कीम इ[सी?] भूलइ।
तइसउ हुसिआर चालिउ काम्बदेउ तणी काई करिसी
अइसउ बृहस्पति ही मउ मू(सू?)झइ।
:१] आंखिहिं रतु करउ कावलु दीसउ कइसउ।
ए कानुउ करइं भमइं किसउ — — — जिसउ।
देवहि करउ चांतु काढिउ हरिणु पाखइ पाखिउ
: कपोल मिला किमा।
देख लइं [१४] तणइं तरणाइं
।खिवे करौं कपुलउं चस चस पउहिं हिमा।
रराखहीं काम्हीं भां[ग?]र करउ भूलउ बोलु।
के केसउ न पसिअउ एहि अमी(पि?) जाणि न मोलु।
र पाहिलपा पहिव[१५]न किसा भावंपि।
]नु पुनिप हि पुनिप हि करा चांद कौडइं तहि करउ
।पउ बोलु गुणन कद[व] चेंडि बजाया मार्वेंपि।
हु करइ तलि लइं पगारों मोंडइं तकपि बोहु लागी।
पीडी कलइ(?)न[१६]पातलइं आसो[अ]पल्लवइं तें तुलिउ विलखी।
।कार कउ मुह करी तोम तजइ
इ न [बल?] भु हरइ त वषमानु करइं।

सूचि आपणी मउर स कूटी बामणी
स।(f)ह करी करिउ लही अवहरु।
[१७]तं पुकावलि – – ह एक बाली लइ र हली भावइ
बनु मुह चंदु श्रीलम वहं नमत बाल सतावीस
हा – री आई मइसउ भावइ।
चण र पहुला अंबा बाहुला पीणा
तोमाह करा मंमस कलत जिसा मा [१८] वहि।
आनु कि काम्बरेवह करह बाह
वारि ओह हात तीह थावहि।
तिवलिहि मीमि रोमराइ स जिसी परइ।
न तोहहि करइ पाकर पुइं मापई भूस तहं निवाडउ करइ।
तहं मांडणु हात [१९] – –उ पुवानि हं
मोती हं करउ एहु जि हार।
स तीहु वेस तहं मइसउ भावइ
मणुआरउ अ[लकार]उ हुमउ एहु संसार।
स पुण बावहीं तें हाथहीं पाएही पाहिरिआ सोना केरा चूडा।
स वेति [४०] पुण्हा [रा] वे वेस है सव भावहि कूडा।
तें रस (स)हली बोड बाही पहि करी पहली स कांचुली
घड र आम तोह नवि अटइ।
अरे कामरेवई वनाहु जिपउ
त एवं पुण्ह नही छोडि कउ हसउ तिहु [४१][कम?]ही पड़इ॥
पाहरणहं तिरी पाहिरिआह वाभणहं तहं स तोह
त कि करउ वेसु पावइ।
आ – वन | – वि वि अरे पीह ही पोसला ही
वोलउ भो करु भावइ॥
तें पुणु – – – – ही एक भावति।
[४२] – –) स तारि करी तीह को भावइ।
अवाव तनु कामरूनह आलंबन बडली भावइ॥
वार्वहि र पहुवत – जिमा।
स लोवहि तावहि करउ निवाणु अविउ [पु] वि [आ]॥
– – – – बाटमाई अवला [४३] [ह]
– – – करी स – – –)।
वेई र बाहीं वेसई करी स नाठि स अक्खरी॥
करवहि र करउ स मोती लहि नि[री] ए वेनु।
स कामनी नहि र कानी हि करउ।

मा – मं – – – – – – – – – – – – हुं।
को स तोल वर [४४] स – – – छाय तैं पर आपी।
काँहु मावंसि रति आवयइ हिआइ मसि पुरु चूपी॥
तुम्हई स – – – क तुम्हहि सरिसउ बोलहि को बूलइ।
म – – – – – – – – – – – – –
मा [४५] म – – – इ बाजइ वो बहु काबहु मोम पूसइ॥
एह इसी सुवेस काँहि आवउ बइसइ
– [रा ?] जहु पूयइ।
अउर मावउ को क – – – – – हु स – – – – – – कय [४६] इ [॥]
॥ • ॥ • ॥ • ॥ • ॥

पोर्ड पाउल वेल बखा [णी।]
[ला]गहं भाखइं बइसी बाणी॥
एउ मिसुयउ – – स – – – – –।
– – – ब [?] हुसें सोसें पोइ [॥]
– ते – – – – – – – इ [४७] – – – [।]
म – – – – – – – – ते – – – – – [॥]

भाषान्तर

[१][1] [ॐ] नमः शिव(ा)य ॥

रोह के द्वारा राजसेल (राजकुल-विलास) कही गई
------अपना जानकर।

जो जिस प्रकार जानता है, वह उस प्रकार वर्णन करता है
राजा और राधा के हास-विलास के लिए।

------------[।] ------- [२] भला भाता है।
बालों में काजल तरल दीजिए, अच्छा गुच्छ फूल ------।
भ्रमर तांबूल द्वारा थोड़ा-थोड़ा रक्त हो गया है [जो] कवि [कहता है]----
अन्य ही शोभा देता है।

------------ । [३] ------ को मोहते हैं।
(उसके) गले में बालकंठी[2] शोभा देती है क्या और कोई [आभरण] उसको---
पाता है?

तरुणी का अंचल इस प्रकार का भला है कि जिसको इसे------ [।
------------[।]-- [४]-- --मांगिए।
स्तन [वर्ण का] कंचुक अत्यधिक चंगा (अच्छा) है [और]----अंग गाढ़ा (कस कर)
बंधा हुआ है।

----भला परिधान भाता है उसकी शोभा क्या कहा जा सकता है?
------------[।]------[५] कुछ कुछ --।
बिना आभरण के दांतों की जो शोभा है वहां अन्य जो वर्ण है मन से मुझे आपन्न कोप
होता है।

ऐसी घड़ी जिस पर मैं आते उस [पर] की तुलना में क्या कोई [पर] वा
सकता है?

[॥ • ॥ • ॥ • ॥]

------------[।]- [६] ------ देखता है।
केश (केश-बन्धन) को बांध लेने की जो भंगिमा (मनोहरता) हो रही है उसका
वर्णन करते हुए---मन रहा है।
[मानो] ने कर में]- जो भांत (भयानक) अहि इन विकसित फूलों के साथ है
[अच्छा] हो कि वे तरुण उनसे (केशों से) बोलें।

------------[।]------ [७] भौंह (भौंहा) है।
[नासो] में वलित्व[3] की जो रेखाएं हैं वे त्रिभुवनभोगों की बांकी गांठ (हाट)
[का चिन्ह] है।

---

१ कोष्ठकों में दी हुई सरस्वतें विन्न लेन की पंक्तियों की हैं।
२ एक बालीदार कंठाभरण।
३—एक कर्णाभरण।

---- कंठ में जो कंठी शोभा देती है वह लोक की दृष्टि को मोहित कर उसे क्षुब्ध करती है।

अंगों में------ [।] ------------ ।

पटी के [८] सुन्दर कंचुक और चादर का जो बांका वर्ण होता है, वह भी यहां पर वर्णित है।

[तेरा] आविल (मलिन) कमरा हुए और प्रयाण है [और तेरा] बांका यौवन ---स्तम्भ (वलिष्ठ) है।

हाथों में रिष्ट उज्ज्वल और कान्ह (कोहे) हैं और उनसे लगे हुए ही जो ताये हैं वे मावित (मलिन) हैं।

-----------साड़ी पट्टी है मानो कामदेव [९]---सनाह मुक्त है।

[तेरे] निश्चय ही भले (भले) पैरों में पायहंसिका[४] है जिसने अंग में बांका लावण्य मोल रक्खा है।

मालव (गोदावरी जन के निवासी) आनंदित [होकर] तुझसे कहते हैं कि तेरा वेष उनके [वेष] से बांका है।

ए कुणि मती (मडरिया?) क्या वल भाव कर [तुम] सोंच ? वह तो आपूर्ण ग्राम्यता [ही] बताता है।

[१] एसी---सरलता मांगी है, [ऐसी] पातली (पतले शरीर की स्त्री) को, हे भाई, किसने छोड़ा है ?

----राउल (राजभवन) में तू ऐसी शोभित है कि तुझे देखते हुए मदन भी मोहित है।

॥ • ॥ • ॥ • ॥

ये कानोड़ (कर्णाट-उत्कल निवासी) क्या ऐसा है कि सोच यदि वे हमारे वेष को न देखें ?

[११] राउल जो तू आसित्र [संपूर्ण शरीर से] शोभित हो रही है, यहां कोई व्यक्ति नहीं है जो (जा) [तू ही] बता मोहित न हो जाए।

[तेरी] आंखों में जो गहर (काला) काजल दिया हुआ है [कवि को] जो [कुछ] ज्ञात है वह उसका वर्ण (सवर्ण) नहीं है।

[तेरे] कानों में करहिमा[५] और कांचरिया[६] (?) है [अन्य] अन्यों (अन्य आभरणों) की शोभा के लिए क्या कर्तव्य (करना) है ?

४—पैरों का एक घुंघरूदार आभूषण।

५—वरद या गजरखनी कापरकआमर नजीकानोमेलटका करदहला जाता है।

६—एक प्रकार का कर्णाभरण (?) ।

[१२] [तेरे] गले में तोतकी कंठी बाती है, यह किस की मृष्ठ गूंथका है?
कंठा [तेरा] लांबल और रक्त [वर्ण का तेरा] कंचुक है, तू [मले ही] न कहे, ये देखते ही उन्मत्त करते हैं।

ए राउल सो (जो) [तू] अपने स्तनों को ऊंचा किए हुए है यह देखते हुए तरुणों को बावला कर देता है।

[१३] [तेरी] जो बाहें हैं वे मस्त – भीत (दीवाल) के अवष्टम्भन स्तंभ – के समान दीर्घ हैं ––– मानो मस्त – भीत के अवष्टम्भन स्तंभ – भी उनके से नहीं हैं।

[तेरे] मृष्ट (मधम किए हुए) हाथों की मृदु शोभा को वहां पर समस्त मग्नात जन चाहते हैं।

[तेरा] परिधान कटहृदमें पर शोभा देता है, [और] राजभवन में वह [परिधान] दीखता हुआ सब जनों को मोहित करता है।

[उसकी] नूपुरों की ध्वनि [१४] कानों में सुहाती है –––––– किसको नहीं भाती है?

जिस हंस-गति से वह इस प्रकार चलती है, वह (हंसगति) वानर (वन्य वापी) भी राउल [की गति] भी नहीं है।

जब ही (?) घर में ऐसी स्त्री अवलम्भता (सेवा) में प्रवेश करती है तब घर राउल (राज-भवन) जैसा दीखता है।

॥ • ॥ • ॥ • ॥

[१५] ऐ टक्सिपुत्र (निर्मली का पुत्र – वीसंप) तू कैसा है कि तू भी मांगता है?––
देख कि तू भी कहता है

[तुममें से] एक भी [एसी] देखी तो उसका यहां वर्णन किया जाए [जिसका वर्णन करते] पुरुषों के हृदय भीगते (स्निग्ध होते) हैं।

जो किसी प्रकार की बालाओं के वरण में बंधा उसने और केवल उस प्रकार के व्यक्ति के नारियों को प्राप्त किया।

चंद्रमा के समान [कोई पदार्थ] दिनों के लिए भी यदि [निर्मित] किये जाएं, तो उन्हें [१६] एक (अकेले) [उसके] मुख से ही बना लिया जाए।

आंखों में इतना और दीप्त काजल है जिसे निहार कर मन भी कम [हो रहा] है।
दोनों एक कनूलिका* से शोभा दे रहे हैं [जिसके कारण] सब मोहन-मदन (आदि ?) नष्ट हो चुके हैं।

---

*—एक प्रकार का कर्णाभरण।

कंठ में जो कलारी (कल्कार वेश की) कंठी शोभित है, वह ऐसे-वैसे सब जनों को मोहित करती है।

[१७] बांधे उभाड़े स्तनों पर जो कंचुक है, वह मानो अनंग का उछाह हो रहा है।

कंचुक के बीच में जो स्तन दिखाई पड़ते हैं, उन्हें निहार कर [लोग] सब वस्तुओं की उपेक्षा करते हैं।

गोरे अंग पर डोरेदार कंचुक [ऐसा लगता] है, मानो सन्ध्या और ज्योत्स्ना का संगम हुआ है।

घाघरे का जो परिधान है [१८] [उसको देख कर] इतर कन्या और बाला [पत्नीका] लज्ज हो जाती हैं।

यह परिधान ऐसा है मानों उसका [एक] पक्ष से [दूसरे] पक्ष में दौड़ जाता हो।"

देखो इस प्रकार के टेल्ल (तिलंगे) के स्वाभाविक वचन हैं [उसके] कान सान्द्र (स्निग्ध) बोल तो लग्न हो जाते हैं।

[राज-भवन में] प्रवेश करती हुई इस प्रकार की टकिनी शोभा दे रही है और इसको निहार कर लोग [आंखें] मल-मल कर [१९] देख रहे हैं।

॥ • ॥ • ॥ • ॥

ऐ मंडिरा (मंडी) तू कैसा है कि तू टक्क की कहता है? ऐ राहु (पथिक वेष वाले) [इसके] आगे [के अंगों में तू] वर्णन करते हुए भूल रहा है।

तेरे द्वारा क्या नहीं ये वेष देखे गए हैं अथवा वैसे-वैसे ही ऐ धृष्ट [इनका] तू वर्णन कर रहा है?

जो गौड़ सुवर्ण (सुवेश) होते हैं तेरे द्वारा वे कहाँ देखे गये? [उन्हें] देखने के अनंतर क्या तुझे [अन्य] वेष मीठे लगते हैं?

[२०] बंधनों (?) से बंधे हुए [उस वेष के] केशों में जो रम्यता होती है क्या एक भी अन्य वेष की शोभावली उसकी बराबरी कर पाती है?

खोंप के ऊपर [बंधा हुआ] आमेल (आपीड)[८] कैसा [लगता] है कि मानों राहु के द्वारा गृहीत रवि जैसा हो।

[उसकी] दृष्टि के फूल [जब] हमारे मानसपुर में फूलते (विकसित होते) हैं उन्हें देख कर समस्त तरुण जन मोहित हो जाते हैं।"

[उसके दृष्टि-पुष्प को देखकर] फूल गुप्त हो गए और तारे मन में [२१] हार गए मानों [इसी कारण] तारे रजनी-मुख गिने जाते हैं।

८—जूड़े के ऊपर बांधी जाने वाली माला अथवा इसी नाम का एक शिरोभूषण।

अरे बर्बर [बंदी] तू ध्यान से देख उसकी ललाटिका के सदृश क्या है?

अरे बर्बर [बंदी] तू देख [उसकी] भौंहें कैसी बनी (सुन्दर) हैं वे कामदेव के धनुष की अनुरूपी जैसी हैं।

अरे अरे बर्बर [बंदी] तू [उसके] तिलक को नहीं देखता है? यह [मानो] [२२] चंद्रमा के ऊपर टीका हुई है।

[उसका] वर्तुल टीका किस प्रकार का भाता है कि [मानो] गुण-पंक्ति की अवलम्बता (सेवा) में---शोभित होता हो।

तिमा बनवारे (पनवारे)[९] को दिए तू उसके लिए नव आसन का निवारण कर रहा है, [जिससे] ए बंदिरा (बंदी) तू अपनी बुद्धि को हार रहा है।

---नों में [उसने जो] ताड़ के पत्त पहने हैं[१०] [वे ऐसे लगते हैं] मानो इस प्रकार शोभा के पत्ते शोभित हों।

[रा के रंगे हुए [२३] [उसके] दांत [ऐसे] राते (रक्तवर्ण के) हैं कि उनी ओंट (द्रय) से कपलिका-पुष --- मत्त [हो गये] हैं।

कंठ में मंडन (आभूषण) पांच लड़ों का [जो] ठाना है उसको प्राप्त करके [मानो] मदन को इस प्रकार भेंट लगा हो।

भाल पर (?) सोने की थाली भी जाए [तो] मुक्ता के साथ होने पर भी [वह] हंसी जाए।

वंचित तापा ही [उसके] गले में भूषण है [२४] जिसको देख कर, ऐ बंदिरा (बंदी) कौन जन मोहित नहीं होता है?

[उसके गले में] फूल का [बना हुआ] तरुणी का जो हार है उसको देख कर [अन्य प्रकार] के हारों का अपहार (त्याग) हो गया।

[उसके] भारी स्तनों के मध्य जो फूल का हार है, वह [मानो] गर्वों की शोभाओं के मध्य में स्थविर (वृद्ध) युग (मध्य) ---- हो।

सारदी (वर्षादिका)[११] के बीच [उसका] भारी स्तन वैसा है कि [२५] जैसे शरद् के अम्बर के बीच चंद्रमा हो।

[उसका] फूल का हार रोमावली से [इस प्रकार] मिलित हो गया (मिल गया) है कि मानो गंगा का जल यमुना [के जल] में मिल गया हो।

उसकी जो चंद्रहास्या (चन्द्रिकाएँ) उसने पहनी हैं वे चंद्रहास्या (चन्द्रिकाएँ) द्वितीया के चंद्रमा की [हो रही] हैं।

९—अर्धमाला—चाप के आकार का एक शिरोभूषण जो ललाट पर लटकता रहता है।

१०—ताड़ के पत्तों के आकार का एक कर्णाभरण (तरकी ?)।

११—एक प्रकार का बहुत महीन वस्त्र।

[उसके] अंगों में मंडन [उसके] अंगों का औज्ज्वल्य है और उसकी कंठी का
[२६] मूल्य ऐ बंदिय (बंदी), [अपनी अवर्णनीयता के कारण] बाल
(अलंकारेसण) [का कारण] बन गया है।
कानों के पहिनने की जो शोभा है [उसके समक्ष] अन्यों (अन्य परिवारों) की
सराहना होते सुन कर मुझे अति क्रोध [होता है]।
[उसके लिए] तो बोरुमिया सेंदूरी[१२] और सेल्लाडी[११] भी की जाएँ, तो [उसका]
रूप देख कर सब जन दीन हो जाएँ।
[उसने] जो धवल कपड़ा ओढ़ रखा है, वह ऐसा लगता है जैसे मुख-शशि ने [२७]
ज्योत्स्ना प्रसारित की हो।
पौढ़ीमाओं का क्योंकि ऐसा उद्देश (नाम) है तब (इसलिए) उस वर्ग को छोड़
कर शिष्ट (कथित) समस्त [सभी] को छोड़ डालिए।
[जिसे] जैसा रुचे [वह] वैसा बोले [किन्तु] उसके वेष का क्या (कोई) मूल्य है?
ऐसी पौढ़ी जब राउल [राजभवन] में प्रवेश करती है, [तब] वह [राउल] मानो [२८]
लक्ष्मी के द्वारा मंडित दीखता है।"

॥ • ॥ • ॥ • ॥

ऐ बौड़ तू एक [ही भाग्यशाली] है, और मैं होड़ लगाता हूँ कि दूसरा और कौन सब
[कर के?] कौन तुमसे मन में (भय के कारण) बोले?
[किन्तु] जो फिर मालवीयाएँ हैं [उनके] उद्देश (नाम) आते ही कामदेव अपने
मारक हथियार भी भूल जाता है
[मन में यह कहते हुए] "वे यहाँ हमारी (हमारे शरीर की) ही तो बाजी जीत
[क्या] कर छोड़ेंगी।"
उसके सरीखा क्या है इस लोक में [कोई] कि इस प्रकार सीझे (कष्ट सहे)?
[उसकी] आँखों के ऊपर जो सीकड़ा किया हुआ है उसका वर्ण ऐसा भाता है,
जैसे वह कामदेव के सिन्दूरित पताका को नमस्कार कर रहा हो।
[३०] [उसके] ललाट सव [वर्ण के] खरे [सुन्दर] और सुसमान हैं वे नीचे
या ऊँचे नहीं हैं।
उन्हें देखने पर अष्टमी का चाँद ऐसा भाता है कि यह मुझे ऊँचे उत्कल-निवासी
का [ललाट] हो।

१२—एक धारीदार कपड़ा।
११—दक्षिण भारत का एक महीन मलमल।

उसकी दोनों रूरी (सुन्दर) भौंहों की भी आड़ की आँखों की प्रशंसा के द्वारा दी
जैसे [११] काम [देव] ने कर में धनुषों को चढ़ाया हो।
ललाट में तो [उन्होंने] जो रूरे (सुन्दर) तिलक दिए हैं उन्होंने नाम के----
शंकरी (पार्वती) के भाल के कार्य के लिए पाया है।
उनके पुर (संपोष) में आने वाली नाक तो ऐसी रूरी (सुन्दर) और सुरेख
(सुघड़) है कि [उसके वर्ण से] सब वर्णों का सौंदर्य उतर गया है [१२] ऐसा
किया है सूने भी सेवा।
[उसकी] आँखों की कोरें तीखी उज्ज्वल और तरल हैं [और] उनकी चपल करती
हुई जिह्वा [इस प्रकार ?] मुग्ध होती है।
जैसा हथियार पाकर कामदेव जगत् को वश करेगा ऐसा बृहस्पति को भी नहीं
सूझता है।
[१३] एक [वर्ण की] आँखों में जो रूरा (सुन्दर) काजल दिया हुआ है वह
कैसा है, मानों बरछों के भय से---जैसा छिपा हो।
पूर्णिमा के चन्द्रमा को फाड़ कर और हरिण को वश में (कलंक) डाल कर
[उसके] दोनों कपोल जैसे [विधाता] ने किए (बनाए) हों।
उन्हें देख कर यहाँ (१४) सब तरुणों के हृदय [उन्हें] न पाने की गुमस (मानसिक
पीड़ा) के कारण पेंस-पेंस पड़ते हैं। बानी में के बनजारी (बनजारों)
का वर्णन करने के लिए बोल गूट (कम पड़)
गया है।
कौन-कौन और जितना नहीं करें ? इस जगत् में [इसका] मूल्य नहीं है।
उन्हें पहिनने के अनन्तर परिधान (झुमके ?) [१५] कैसे जाने हैं
मानों पूर्णिमा ही पूर्णिमा के दो चांद उनकी कोड़ से उनके स्वाभाविक बोल
सुनने के लिए [अपना] कार्य छोड़ कर नवीन आए हुए आने को गमित
करते हों।
[उनके] नीचे-ऊपर के ओठों से यदि [पड़ता है] वह धारा प्राप्त की है
जो दुरलभ प्रकाश [१६] और कपोल-भास्वती ने उन्होंने पुष्ट कर ली [है]।
[यदि वे] उनके अनुराग (मिलन) के लिए [उनके] मुख की शोभा मन रही है
[यदि] कोई भी [उनके] परिमाण का हरण करे तो उसमान कर।
मानो या बुद्धि है वह चूरी (जादू) वाननी (बनी-ठनी) है इस कारण
उनको ही स्नान देता हूँ।
[१७] [उन्होंने] जो एक पानरली [पने से] -- बाँधी है वह इस प्रकार
भाती है
मानो सुमेरु की अलकनन्दा (गंगा) के मध्य में कालिन्दी यमुना जल्दन्

----नाई हुई इस प्रकार नमस्कार करती हों।
[उनके] स्तन प्रभूत ऊँचे वर्तुल और पीन हैं
[वे] सोने के मंगल-कलश जैसे भाते हैं।
[३८] अन्य कि [वे] कामदेव के घटों की [जो] वारि (जल) की ओट में हों, शोभा पाते हों।
त्रिवली में रोमराजि है, और उसको वे कैसे धारण करती हैं
कि [मानो] शोभा के पक्ष में दो नागों का युद्ध हो [और वह] वहां [उस युद्ध का] निवारण करती हो।
वहां मंडन छाव (?) – [३९] ------
और मोती का एक ही हार है।
उस[की] शोभा देख कर वहां ऐसा लगता है
कि यह संसार असार [ही मसार] हो गया है।
तो फिर जब उन्होंने हाथों और पैरों में सोने के चूड़े पहने
उसे देखकर [४०] तुम्हारे जो वेष हैं, वे सब झूठा (बेकार) लगते हैं।
उन्होंने रक्त जैसी चादर और उसी पटी (वस्त्र) की जो कंचुकी पहनी है,
वह और ही शोभा कवि कहता है वहन करती है।
अरे, कामदेव ने उत्साह [धारण] किया है
तो वह इस प्रकार तुम्हें नहीं छोड़ने को है ऐसा तीनों [४१] भुवन ही कहता है।
परिधानों के अवरोध को पहन कर कांछ से जो शोभा [होती] है
वह [शोभा] क्या कोई [भी] अन्य वेष पाता है?
--अच्छा---दोनों अरे चीड़ देशवासियो गोदावरी क्षेत्रवासियो
बोलो जो जिसे भावे।
उन्होंने फिर------ एक अवली (एकावली)
[४२] ---- उसकी शोभा को कौन गावे?
[उनकी] जवाव (जवाई)[१४] कामधुम के आलवाल जैसी भाती है।
[उनके] पैरों के द्वारा रक्तोत्पल---जीते जा चुके हैं
जिन्हें लोक में लक्ष्मी का निवास कहा हुआ सुना गया है।
---- वर्तुल और उज्ज्वल
[४३] ---- की ----।

१४—जौ के आकार की सोने की गुरियों की वह माला जो आधी अर्थात् गले में केवल सामने की ओर रहती है।

उन्होंने सब वैर्यों की जो लक्ष्मी (कान्ति) थी उसका अपहरण कर लिया।
कहाँ था ही जो भारी है उसका सिन्दूरी वेष है।
---------- जो सांवली है उसका पाटली का -- है।
---------- ।
कोई उस शोभा की [४४] धारण करो पर [जान लो कि] उसने छाया [मात्र] प्राप्त की
[कि] जिसके आते ही अपने हृदय में रति अत्यधिक क्षुब्ध हुई।
तुम ही------ तुम्हारे साथ बातों में कौन जूझे (युद्ध करे) ?
अन्य [४५] --- वर्णन करे उनका जो वस्तुएं कार्य में वह [आवश्यक] समझे।
इस प्रकार ऐसी सुवेष चित्त [घर] में आकर प्रविष्ट हों
-- वह राउल (राजकुल) कहां जमावे।
और कोई कहे ---------- रचे।
[४६] ॥ • ॥ • ॥ • ॥
चोर के द्वारा [यह] राउलवेल (राजकुल-विलास) कही गई,
और बारह वाताचा की वैसी उसकी वाणी थी ॥
इसे सुनते हुए ----------[।]
---- वह हास-तोष के लिए -[।]
------------[४७]--[।]
-------- --- -- -[।]

शब्दानुक्रमणी

संख्याएँ छिताईवेल की पंक्तियों की हैं।

वि० (ईदृश)=ऐसा इस तरह का अइसी ५ अइसी १० अइसी १४ अइसी १४ अइसो २७ अइसी २७ अइसउ १२ अइसउ १२, अइसउ १७ अइसउ १९

वि० (अपर)=अन्य दूसरा तद्भिन्न अउर २८ अउर ४५

पु०=(अङ्ग)=शरीर अंगि १७ अंगर २५ (दे० आंग)

स्त्री० (अक्षि)=आंख नेत्र अंखिहि १९

सक० (आ+ख्या)=कहना बोलना अखादहं १५

अक० (अस्)=होना अछउ ६ अछइ १६

पु० (आसन)=बैठने का स्थान अछण २२

स्त्री० (अट्टम)=हाट फाटक (?) अटमी २१

(देशज)=भाषा अढ़ा १५

पु० (अनङ्ग)=कामदेव मन्मथ अणंग १७

वि० (असार)=सारहीन अणसारउ १९, अ [असार?] २१९

अ० (अति) अति ४ अति ५, अति २९ अति ४४

अ० (अन्यथा)=तथा अनु ११

वि० (अन्य)= दूसरा अन १९

पु० (देशज)= (१) आमेल आमनेम अथवा आमस्य भाग का शिरोभूषण (२) जूड़े के ऊपर बांधी जाने वाली माला अम्बेवल २०

स० (अस्मद्)= हम अम्हाणउं १०, अम्हारे २० अम्हारइ २८

अ० (अरे)=संबोधन का सूचक अव्यय अरे २१ अरे २१ अरे ४० अरे ४१

सक० (अप+हृ)=अपहरण करना, छीन लेना दूर करना अवहरहुं १९ अवहरी ४१

पु० (अपहार)=अपहरण परित्याग अवहा[र] २४

पु० (अशोक)=अशोक पल्लवई १९

पु० (अधर)=ओष्ठ अह[र] २

पु० (अहि)=सर्प अहि ६

वि० (आकुल)=आकुल दुखी आउल १३

(आ+विश)=शरीर-प्रवेश आउंटउ ११

स्त्री० (अक्षि)=आंख नेत्र आंखिहि २, आंखिहि ११ आंखिहि भरइं १० आंखिर १२ आंखिहि ११

पु० (अङ्ग)=शरीर आंगउ ४ आंगहि ७ आंगहि २५ (दे० अंग)

स्त्री (देशज)=ढेर आंग २१

वि० (आन्त)=मनमानक आंतु ६

आंतर पु० (अन्तर)=मध्य भीतर आंतरे २४

आख् सक० (आ+ख्या)=कहना बोलना आखइ ९, आखहि १५

आग पु० (अग्र)=आगे का भाग आगें ११

आछ् अक० (अस)=होना आछहि ७

आछ वि० (अच्छ)=स्वच्छ निर्मल आछउ २

आठमि स्त्री० (अष्टमी)=आठवीं तिथि आठमिहि करउ १०

आड स्त्री० (देशज)=ओट आड आडाइं १०

आथि अ० (अस्ति)=है आथि ११ आथि २७ आथि २९, आथि १४

आध पु० (अर्ध)=आधा आधूआधें १७ आधइं १८

आन । आण स वि० (अन्य)=दूसरा आन २ आनु ९, आनु ५, आनहि ११ आन १८ आन २९, आनु १८ [आ]न ४० आनु (?) ४४

आनंदिय वि० (आनंदित)=हर्षित १

आनिक वि० (आनिक्क-देशज)=एक दोका आनिक ७ आनिकु ८ आनिकु ८, आनिक ९, आनिक १

आपण वि० (आत्म+तन)=स्वीय स्वकीय आपणु १ आपणी १२, आपणाइ २८ आपणी ११ आपणइ ४४

आपुल वि० (आपूर्ण)=पूर्ण भरपूर आपुली १

आल पु० (आल)=कलंकारोपण दोषारोपण आलु २१

आलवाल पु (आलवाल)=क्यारी थाला आलवालु ४२

आव् सक० (आ+या)=आना आगमन करना आवइ ५, आवंतु २८ आवंति ४४ आविउ ४५

आवलि स्त्री० (आवलि)=पंक्ति श्रेणी रोमावलि २९, एक आवलि ४१

आविल वि० (आविल)=मलिन,अस्वच्छ आविलु ८, आविलु ८

आहरण पु० (आभरण)=भूषण अलंकार आहरणे ५

इ अ (एव)=ही इ १ इ १९, इ ११ इ १७ इ २० इ २८,इ १९, इ १७ इ ४० इ ४४

इउं अ० (इमो<इयत्)=इस लोक में यहां इउं २१

इतर वि० (इतर)=अन्य दूसरा इतर १८

इम सर्व० (एवम्) यह इम १२

इस वि० (ईदृश)=ऐसा इसउ १० इसउ ९ इसी १७ इसी ४० इसउ ४० इसी ४५

इहां अ० (इह)=यहां इस जगह इहां १८

उगाय वि० (उद्गत)=जमीन से आया हुआ उगाया १५

ऊन वि० (ऊन)=न्यून हीन ऊन १०

उघाड़ वि० (उद्घाट)=खुला हुआ अनाच्छादित उघाडउ १७

पु॰ (औज्ज्वल्य ?)=उज्ज्वलता उजालु २५
पु॰ (ओढन — देशज)=उत्तरीय ओढनी उड्ढणु २१
वि॰ (उत्पतित)=ऊँचा उन्नत, ऊपरका उप्पडलें १५
पु॰ उपमानु १६
वि॰ (उन्मत्त<प्रमत्त)=उन्मादयुक्त उमाहउ १२
पु॰ (उद्देश<उद्देश)=नाम-निर्देश-पूर्वक वस्तु-निरूपण उद्देसु २७ उवेसु २८
वि॰ (उच्च)=ऊँचा ऊँचउ १२ ऊँचउ १० ऊँचा १७
वि॰ (उज्ज्वल)=निर्मल स्वच्छ ऊजल ८ ऊजला १२, ऊजलाइं ४२
अक॰ (अव+तृ)=उतरना नीचे आना ऊतरिमइ ११
अ॰ (उपरि)=ऊपर ऊपरं १० ऊपर २१ ऊपरि २१
अ॰ (एव)=ही घोए २४
स॰ (एतत्)=यह एउ २६ एउ ४६
वि॰ (एक)=एक एक २० एकु २८ एकावलि १७ एक १७ एकु १६, एकावलि ४१ (दे॰ एकक)
वि॰ (एक)=एक एकक १५ एकेण ११ (दे॰ एक)
अ॰ (एत्थ<अत्र)=यहाँ यहाँ पर एथु ८ एथु जु ११ एथु १५
अ॰ (एवं) एवं २२ एवं २१ एवं ४०
वि॰ (ईदृश)=इस प्रकार का या इसके जैसा एहउ १ एहा १६ एहा १८, एही १८ एह ४५
वि॰। स॰ (एतद्)=यह एहु १० एह २१ एहु १० एहिं १४ एहु १६
पु॰ (ओघ)=दाह ओघ ७
पु॰ (ओष्ठ)=होठ ओठडं १५
स्त्री॰ (देशज)=ओट आड ओड १८
वि॰ (ओद्धृत<ओदृत)=उत्तम दैवीय ओदिम १०
सक॰ (देशज)=ओढ़ना ओढिज्ज २१
स्त्री॰ (दे॰ ओलग्ग)=सेवा चाकरी भक्ति ओलगं १४ ओलगं २२ ओलगं १०
वि॰ (कीदृश)=कैसा कइसी १४ कइसे २० कइसी २१ कइसउ २४ कइसे २६ कइसउ ११
स॰ (क+पुन ?)=कौन। कउणु ४१
पु॰ (कञ्चुक)=चोली कंचुआ ४ (दे॰ कंचू)
पु॰ (कर्ण)=कान कंनि ११

कंठी स्त्री॰ (कण्ठिका)=गले का एक आभरण कंठी १९

कंपूवडिम स्त्री॰ (देशज)=कान का एक आभरण · कंपूवडिमहि १९ (तुल॰ 'कांचडिम')

कंचय पु॰ (कञ्चुक)=चोली कंचुयू १७ कंच्यू १७

कछडा पु (कक्षा)=एक प्रकार का पहनावा कछडा ४, कछडा १७

कज पु॰ (कार्य)=काम कज १९

कत अ॰ (कुत्र)=कहाँ कताहुं १६, कत १९

कनवास पु॰ (कर्ण+पार्श्व)=कान का एक आभरण कनवासहीं १४

कपोल पु॰ (कपोल)=गाल कपोल ११

कम्मल न॰ (कज्जल)=काजल कम्मलु १९

कर् सक॰ (कृ)=करना करेवउ ११ करइ १२, करइ १२, करि ११ क[रि ?] २८, करि २६, कीए ११ करिउ १२ करीसी १२, करिउ १६, करहुं १६, करइ १८

कर पु॰ (कर)=हाथ करउ २६, करउ ११

करडिम्ब (करट+इमा)=कानों में पहना जाने वाला एक आभरण (करट अर्थात् गण्डस्थल पर लटकते रहने के कारण जिसका यह नाम पड़ा होगा) करडिम्ब ११

कलस पु॰ (कलश)=घड़ा कलस १७

कलित वि॰ (कलित)=युक्त, सहित कलितउ २५

कवि पु॰ (कवि)=कविता करने वाला कवि २, कवि १६, कवि ४०

कह् सक (कथय)=कहना, बोलना , कहइ ४१

कहा अ (कथम्)=क्या कहा २१

काकाई अ॰(किम् ?)=क्या का १० काई ११ कामुतणी १२, कापु १४ काइ १२

कांचडिम स्त्री॰ (देशज)=एक कर्णाभरण कांचडिमउ ११ (तुल॰ कंपूवडिम)

कांचुली स्त्री॰ (कञ्चुलिका)=चोली कांचुली ४०

कांचूकाचू पु॰ (कञ्चुक)=चोली काचू ८, कांचू १२

कांठ पु॰ (कण्ठ)=गला कांठिहिं ७ कांठिहिं २१

कांठी स्त्री॰ (कण्ठिका)=गले का एक आभरण कांगी १ कांठी ७ कांठी १२, कांठी २५

काछ स्त्री॰ (कक्षा)=कमर पर बांधने का एक वस्त्र कांछी २१

काछडा पु॰ (कक्षा)=काछा काछडा ८ काछडाई ४१

काज पु (कार्य)=काम काजु ११ काज १९ काजह ४५

काजल पु॰ (कज्जल)=काजल काजल २ काज[लु] ११ काजलु १६

कान पु॰ (कर्ण)=कान [कानि] हिं ७ कानहिं ११ कान १४ कानहु २२, कानहीं १४

पु० (कर्णाट+ओड्र)=कर्णाट से मिले हुए उड़ीसा के प्रान्त का निवासी काणोडउ १०
पु० (कर्पट)=कपड़ा कापड २६ कापडहिर कप्पड ४१
पु० (काम)=कामदेव काम्वे ८ काम्वकरी २१ काम्वदेउ २८ काम्वदेवह २६, कामें ११ काम्वह ११ काम्वदेउ १२, काम्वोवह कराइ १८, काम्वदेवई १० काम्वपूमई ४२
अ० (कथम्)=क्या काइँ २१
अ० (किम्)=क्या कि १ कि ५, कि ५, किं कि १६, कि २७ कि ४१
अ० (किम् ?)=कि कि २६, कि १८
य वि० (कृत)=किया हुआ किअउ १२, किआ ११ कियउ ११ कियउ ४०
सक० (कृ)=करना किज्जइ १५ (दे० कीज)
वि० (कीदृश)=कैसा किस तरह का किसउ २६, किसा १५, किसी १८ (दे० कीस')
अ० (किम्)=क्या की १६
स० (कृ)=करना कीजइ २१ कीजइ २६ (दे० किज्ज)
(दे० किम) कीए ११
वि० (कीदृश)=कैसा किस तरह का कीस १० (दे० किस)
पु० (कुज)=मंगल ग्रह कुज २४
स्त्री० (कपर्दि)=कौड़ी कुडी २२
पु० (कूट)=भ्रान्तिजनक वस्तु झूठा बेकार वस्तु कूडी ११ कूडा ४०
सर्व० (क)=कौन के १४ के १४
वि (कियत्)=कितना केतउ १४
पु० (केश)=बाल केस १०
वि० (कीदृश)=किस प्रकार का केरा १५, केइ २२
वही केहर २२
स (क)=कौन कोइ ५, को १० को १४ को २८ को २८, कोइ १५, को ४२ को ४१ को ४४ को ४५,
सक० (देशज)=बुलाना आह्वान करना कोकु ११ (दे० कोकर)
(दे कोक) कोकु ११
पु० (कोट)=कोट कोटई १५
पु० (क्रोध)=कोप कोह ५, कोप २६
स्त्री० (देशज)=कन का दुख कामिनी पीड़ा कमुनई १४

खप् अक० (क्षप्)=नष्ट होना खपिअउ १४
खीज् अक० (खिज्ज<खिद्)=खेद करना खिन्न होना, कुपित होना। खीजइ २१

खुभ् अक (क्षुभ्)=क्षोभ पाना कुपित होना खुभइ १२
खूट् अक (खुट्ट-देशज)=छूटना कम पड़ना खूटउ १४
खूत वि० (खुत्त-देशज)=अगाध खूता ११
खूब वि० (क्षुब्ध)=क्षोभ प्राप्त घबड़ाया हुआ खूबी ४४
खोंप स्त्री० (देशज)=सिर के बाल खोंपकी २०, खोंपहि ऊपरि, २० खोंप २९, खोपहि ऊपरि २९,

खोह् सक० (क्षोभय्)=विचलित करना धैर्य से च्युत करना खोहइ ७
गइ स्त्री० (गति)=चाल गइ १४
गउडि स्त्री० (गौडीया)=गौड़ निवासिनी गउडिहु केरउ २८ गउडि २७
गंठिअ वि (ग्रथित)=गूँथा हुआ गंठिआ २१
गण् सक० (गणय्)=गिनना गिनती करना गणिए २१
गल पु (गण्ड)=गाल कपोल गल ११
गम्भारिम्म स्त्री० (ग्राम+पाल+इमा)=ग्रामीणता ग्राम्यता गम्भारिम्म १
गल पु (गल)=गला ग्रीवा कण्ठ गलइ १ गलइ १२ गलहिं २१
गांग स्त्री (गङ्गा)=गंगा नदी गांगहि २५
गाढ वि (गाढ)=निविड़ सान्द्र, मजबूत दृढ़ गाढउ ५४ गाढा ८ गाढी ८
गूण पु० (गुण)=प्रत्यंचा धनुष का डोरा गुणइ १
गुआ पु० (गुवाक)=एक प्रकार की सुपारी गुआ २२
गोर पु० (गौर)=शुक्ल वर्ण गोरी १५, गोरउ १७ गोरी ४१
गोल्ल पु० (गौल्य)=गोदावरी क्षेत्र का निवासी गोल्ले ८, गोल्ला ४२
गोह पु० (देशज)=ग्राम प्रमुख योद्धा पुरुष गोहा ६
गौड पु० (गौड)=बंगाल का एक भाग अथवा उसका निवासी गौड १९, गौड २८ गौड ४१

घर पु० (घर<गृह?)=घर, मकान घर ५, घर १४ घरे १४
घर पु० (घड<घट)=घड़ा घरउ १८
घाघर पु० (घग्घर-देशज)=लहंगा घाघरेहिं घेरा १७
घाल सक० (घल्ल-देशज)=डालना फेंकना घालिउ ११
घेतल वि (गृहीत)=पकड़ा हुआ घेतले २
चंद पु (चन्द्र)=चन्द्रमा चंद १५ चंद १७
चंदहाई स्त्री (चन्द्र+भासिका ?)=चन्द्रिका चंदहाई २५, चंदहाई २५
चडाव् सक० (देशज)=चढ़ाना चडाविअउ ११
चाडु पु० (चाटु)=भांग मेय चाडुइ करई ११

वि० (चंग-देशज)=सुंदर, मनोहर, रम्य चांगउ ४, चांगिम्म ६ चांगा ९
पु० (चन्द्र)=चंद्रमा चांदहि २१, चांदा २५, चांदहि २५, चां (दु) १० चांदु ११ चांद १५
अक० (चल्)=चलना गमन करना चालंति १४
सक० (देशज)=देखना चाहइ ११, चाहहि ११ चाहइ १८ चा (हि) २१
वि० (चिन्तापद्)=चिंतापर चिन्तवंतहूं ७
पु० (देशज)=हाथों या पैरों में पहना जाने वाला वस्त्र चूरा १९
सक (छंड—देशज)=छोड़ना छाडी १०,
स्त्री० (छाया)=छाया छाय ४१
सक० (छोटय्)=मुक्त करना छोडि कउ ४०
सर्व० वि० (या)=जो जसु १ १४ जे १७ जे २५, ज० २० ज २१ ज ४० जसु ४१ ज ४१ जे ४२, ज ४१ ज ४१ ज ४१ जहि ४४ जहि ४५ (दे० ञ जे)
अ० (यं<यद्)=कि ज २८ ज ३५, ज ३८ (दे० जं)
अ० (यदा)=जब जहि १४, ज २७
वि० (यादृश)=जैसा जिस प्रकार का जइसउ १४ जइसे २० जइसी २१ जइसउ २५, जइसे २७ जइसउ ३० जइसी ४२, जइसी ४६
अ० (यदि)=यदि जउ १०
स्त्री० (यमुना)=यमुना नदी जउणहि २५
अ० (यत्)=कि जं १
पु० (जगत्)=संसार जगहिं १२ जगी (जगि ?) १४
पु० (जन)=मनुष्य लोग जणु ११, जणु ११ जणु ११ जणु १६, जणु १८ जणु १८ जणु २४ जणु २६
अ० (देशज ?)=इव मानो जणि २० जणि २५
अ० (देशज ?)=इव मानो जनु ८ जनु २१ जनु २२ जनु २७ जनु ११ जनु १६, जनु १७
पु० (जल)=पानी जल २५
पु० (जलद)=मेघ जलद २५
पु० (जल्लार)=एक बनाई देश जल्लारी १६
अ० (यदा)=जब जबहीं १९
पु० (जवादि)=बच्चे का एक आभरण एक प्रकार का अलंकार जवाद ४२
वि० (यद्)=जो जा ५, जा १४
वि० (यावत्)=जितने भी जाउ २८

जाण सक० (ज्ञा) = जानना जाणइ १ जाणइ, ११ जाणी ४६
जाल पु० (जाल) = जाली जाला काठी १ जालउ २१
जि अ० (एव) = ही जि ३९ (तुल० जी)
जिअ वि० (जित) = जीता हुआ पराभूत जिआ ४२
जिस वि० (यादृश) = जैसा जिस प्रकार का जिसउ २ जिसउ ११ जिसा ११ जिसा २७ (तुल० जइस)
जी अ० (एव) = ही जी ८ (तुल० जि)
जीभ स्त्री० (जिह्वा) = जीभ रसना जीभ १२
जूझ अक० (युध्य < युध्) = लड़ना लड़ाई करना जूझइ ४४, १८
जूझ न० (युद्ध) = लड़ाई, संग्राम जूझ ३८
जुन वि० (जुण्ण < जीर्ण) = बूढ़ा पुराना जुनउ १०
जे वि० (य) = जो जे ६ जे ७ (तुल जे जो)
जें वि० बहु० (इमे) = ये जें ६, १५
जेम्व अ० (यथा ?) = जिस प्रकार जेम्व १
जेह वि० (यादृश) = जैसा जेहर १९ जेहर २७
जो वि० | सर्व० (य) = जो जो ५, जो ९, जो ११ जो १५, जो १६, जो १७ जो १७ जो २४ जो ४१ जो ४५ (तुल० जे)
जो अ० (यत) = क्योंकि जो ११ जो २७
जोय सक० (जोअ-देशज) = देखना जोयन्त १२
जोवन पु (यौवन) = तरुणता जोवणु ७
जोन्ह स्त्री० (ज्योत्स्ना) = चंद्र प्रकाश जोन्हहि १७ जोन्ह २७
झांख सक० (देशज) = उपालंभ देना अथवा अक० = संतप्त होना निःश्वास लेना झांखइ ९, झांखइ १० झांखहि १५
झुणि पु० (ध्वनि) = शब्द आवाज झुणि ११
टक्क पु० (टक्क) = देश-विशेष टक्किणि १८ (दे० टाक)
टाक पु० (टक्क) = देश-विशेष टाक १९ (दे० टक्क)
टीका पु० (देशज) = तिलक टीका २१ टीका २२, टीका २२, टीके ११
टीहु पु० (दीह < दिवस) = दिन टीहा १५
टेल्ल पु० (अप०) = तिलिंग-निवासी तिलंगा टेल्लि १५, टेल्ल १८
ठेंकर वि० (देशज) = भयाक्रांत ठेंकर १०
डह अक० (दह) = जलना डहि १९ डहि १८ डहि १८
डहर वि० (देशज) = लघु छोटा तुच्छ डहरउ ११ [ड] हप १५
डिठ वि० दृष्ट = ढीठ डिठी १२
णहि अ (न) = नहीं १९

तेतें सर्व० बहु० (ते)=वे ते ६, तेंहकें ७१ ते ७ तेंहना ९, ते ९, ते १७, ते १९, ते २० ते २५, तें २५, तें ३१ ते ३२, ते ३३, तेम्हर ३४ तेहि करउ ३५, तें ३६, तें ३९, ते ४०, तें ४० तें ४१, तेंहर ४३

तेथु अ० (तत्र)=वहाँ तेथु ३३ तेथं ४४, (दे० ता)

तेम्व अ० (तेवम्)=उस प्रकार तेम्व १

तेह वि० (तादृश)=उसके जैसा, वैसा तेहा १५, तेहा ३१ तेहर १९, तेहर २७

तो सर्व० (त्वम्)=तुम तो ९, तो (?) ९, तोही १०

तोर सक० (तोड<त्रुट्)=तोड़ना तोरउ २७

तोस पु० (तोष)=संतोष तोसें ४६

थ अक० (अस्)=होना थइ ३३ थइ ३३

थण पु० (स्तन)=कुच थणहिं १२, थणहिं १७ थण १७ थणहर २४ थणहर २४ थण १७

थाड वि० (थड्ड<स्तब्ध)=निश्चल अविचाली पर्वीला थाडा ८

दढ वि० (दृढ)=मजबूत बलवान पीला दढ ८

दसण पु० (दशन)=दाँत दसण २२

दिठ वि० (दे० दीठ)

दिठ वि० (दिष्ट)=कथित प्रतिपादित दिठ २७

दिठ्ठुक पु० (दृष्टि+पुस्त)=दृष्टि का पुष्प दिठ्ठुक १०

दिठि स्त्री० (दृष्टि)=दृष्टि नजर दीठि ७

दित्त वि० (दीप्त)=प्रकाशित कांतियुक्त चमकीला दित्ता ३१

दीज् सक० (दिश—दा) देना दीजइ

दीठ वि० (दृष्ट)=देखा हुआ दीठे १९, दीठे ३१

दीन वि० (दिन्न<दत्त)=दिया हुआ दीनउ ३१ दीनउ २९, दीनउ ३३

दीस् अक० (दृश्)=दिखाई पड़ना दीसतु ३३ दीसइ १४, दीसहिं १७ दीसइ २८

दीह वि० (दीर्घ)=बड़ा दीहउ ३३

दु वि० (द्वि)=दो दुमनी २९, दुहुं १५

दुइ। दुई वि० (द्वि)=दो दुइ ३१ दुई ३० दुई ३३

दुम पु० (द्रुम)=वृक्ष कामद्रुम ४२

दे सक० (दा)=देना देइ २ ४६

देख् सक० (दृश्)=देखना देखति ९, देखत १० देखइ १० देखु १२ देखि १९, देखि २० देखु २१ देखु २१ देखसि २१ देखि २४ देखि २४, देखि २६, देखिउ ३०, देख ३१ देख ३१ देखि [उ?] ३६

पहर सक० (पहिर < परि + धा) = पहनना पहरिया १४ पहरिया १६ पहरही ४० पहरिया ४१
पहरण पु० (परिधान) = पहनावा पहरणइ ४१
पढ् अक (पठ्) = पढ़ना पढहि १४ (दे० पढ्)
पढि स्त्री० (पदी) = वस्त्र कपड़ा पढिहु ७ पढि ठउी ४
पनु पु० (पण) = शर्त होड़ पनु २८
पमहण पु० (परिधान) = पहनावा प [मह] णु २६ (दे पहरण)
पर् अक० (पठ्) = पढ़ना परै १६, पर १८ परइ १८ (दे० पढ्)
पर अ० (परम्) = उपरांत परन्तु पर ११ पर ४४
पर वि (पर) = केवल मात्र पर १५
पल्लव पु० (पल्लव) = किसलय पत्ता पल्लवइं ११
पवाण पु० (प्रमाण) = सही ठीक सच्चा सुपवाणु १०
पवाल पु० (प्रवाल) = मूँगा विद्रुम पवालइं १५
पसार् सक० (प्र + सारय्) = फैलाना पसारेल २०
पहिरण पु० (परिधान) = पहनावा पहिरणु ४ पहिरणु ११ पहिरणु १७ प[हि]र णु १८
पहि सक (परि + धा) = पहनना पहिले २२,
पहुल वि० (पहुत < प्रभूत) = प्रचुर पहुला १७
पा पु० (पाद) = चरण पाइ १५
पाअनाव पु० (पाद) = चरण पायेमु ५, पाइहि ५, पायही १६ पायही ४२ (दे० पा)
पाच वि० (पञ्चन्) = पाँच पाच स र २१
पाव सक० (पाप < प्र + आप्) प्राप्त करना [पा] वइ १ पावइ ४ पावइ ५, पाविमउ ११ पाविउ १२ अपाविवकरी १४ पावहि १८ पावइ ४१ (दे० पाव्)
पाल पु (पक्ष < पक्ष) = ओर, तरफ पालइं १८ पालउ १८ पालइ ११, पालइ १८
पाटण गुजरात का नगर-विशेष पाटणी ४१
पाटी स्त्री (पट्टिका) = पट्टी पाटी ८
पात पु० (पत्र) = पत्ता पर्ण पात २६, पात २२
पातल वि० (पत्तल-पैतल) = पतला कृश पातली १०
पाव् सक (पाप < प्र + आप्) = प्राप्त करना पावइ ४२ (दे पाव)
पारडी न० (पारडिका) = एक प्रकार का महीन वस्त्र पारडी १४

पाईसिया स्त्री० (पादहंसिका)=स्त्रियों के पैरों का एक आभरण पाईंसिया १

पीण वि० (पीन)=पुष्ट मांसल पीणा १७

पुड पु० (पुट)=मित्र संबंध प्रम पुडि ८ पुडहं ११

पुण अ० (पुनर्)=फिर पुणु २८ पुणु १९, पुणु ४१ (पु) णु ४१

पुत्त पु० (पुत्र)=लड़का पुत १९, पुत २१

पुरुण वि० (पुरुष<पौरुष)=लोचना पुरुणी १२

पुण्णिम स्त्री० (पूर्णिमा)=पूर्णमासी पुण्णिमहि करउ ११ पुण्णिमहि करउ १९
पुण्णिमहि करउ १५

पेह सक० (परि<धा)=पहनना पीहिमल २५

पेहण पु० (परिधान)=पहनावा [पे]हण करि २१

फड्फड् अक० (फरफराय्)=फरफर करना फड़फड़ाना फड्फड़ें पर ११

फल पु० (फल)=फल फलहं १५

फाट पु० (फाट-वैराग्य)=फांक अंश भाग फाटा १२

फाड सक० (स्फाटय्)=फाड़ना फाडिउ ११

फुल्लकुसुम पु० (कुसुम)=फूल पुष्प फुलु २ फूल्में १ फूल २०

फुल्ल् अक० (फुल्ल)=फूलना पुष्पयुक्त होना विकसित होना फुल २०

भ् सक० (स्फोटय्)=परित्याग करना भरि १५

भउंह अक० (भू)=होना भइ २२ भउ २४

-भम- स्त्री० (भ्रू)=भौंह भउंही २१ भउंह १०

भण् पु० (भाग)=हिस्सा टुकड़ा टुमनी २१

भय सक० (भण्)=कहना बोलना भण ९, भणिउ ४२ भणउ ४५

भाउज भ० (भय)=डर भई २८ भयर ११

भाण पु० (भ्रातृ)=भाई भाउजं १०

भाल वि० (भस्म<भाव)=अच्छा भालउ ९, भालउ १ भाल १४

भाव् भ० (भाल)=ललाट भालिहि करउ ११

अक (भाव्?)=पसन्द होना अच्छा लगना भावइ २ भावइ ४ भ
[ावइ] १२ भावइ १४ भावहि १९, [भा]वइ २२ भावइ २० भावइ
१० भावहि १५ भावइ १७ भावहि १८ भावइ १९, भावहि ४० भावइ
४१ भावइ ४२

भाम स्त्री० (भामा)=बोटी भामइ ११

भिज्ज् अक० (भिद्)=भीगना भिज्जइ १५

भुल अक (भ्रग्)=भूलना भुल्लिं १९, भुगा १८

भुलण भ (भूरुण)=चमकदार भूरुणा भुलणु २१

भेडम वि० (भरव)=विराग भेडम २१

भमग पु० (भ्रमण)=भ्रमण-घर भमण १७

मंड् सक॰ (मण्ड्) = भूषित करना मंडिगहइ १६

मंडन न॰ (मण्डन) = भूषण भूषा मंडन १६

मण पु॰ (मनस्) = मन मण २०

मण अ॰ (मनर्य < मनाक्) = थोड़ा अल्प मणु २, मणु २, [म]णु २, मणु ५

मत्त वि॰ (मत्त) = मद-युक्त, मतवाला मत्ता १६

मयण पु॰ (मदन) = कन्दर्प कामदेव मयणुव १० मयणु १६, मयणहि २१

मल् सक॰ (मर्द < मृद्) = मीसना मसलना मलना मल १८ मल १८

मांड सक॰ (मण्ड) = भूषित करना मांड ७ मांडी ९, मांडी १० मांडेव २८

मांडण न (मण्डन) = भूषण भूषा मांडणु २१ मांडणु २६, मांडणु २८
(दे॰ 'माण्डण')

मांभ न॰ (मध्य) = बीच मांझें २४ मांझि १८, मांझु ४९

माठिअ वि॰ (मृष्ट) = मसृण या चिकना किया हुआ माठिअउ ११

माठी वि॰ (माठिअ < माठित) = समालङ्कृत्य वर्मित माठी ९

माण्डण न॰ (मण्डन) = भूषण भूषा मा[ण्डणु] २, माण्डणु १ (दे॰ मांडण)

मात वि॰ (मत्त) = मदयुक्त मतवाला मातें २१

मालम पु॰ (मालम) = प्रधि व प्रदेश-विशेष मालमी २८

माष पु॰ (माष) = उड़द (?) माषें २१

मिल अक॰ (मिल) = मिलना मिलिअउ २५

मीठ वि॰ (मिष्ट) = मीठा मधुर मीठे १९

मुह पु॰ (मुख) = मुँह मुहँ १६, मुहा २१ मुहसहि २२, मुहतणि २६
मुहकरी १६, मुह १७

मूस् अक॰ (मुह्य < मुह्) = मोहित होना मूसहि २० [मू]सइ २४

मेदी पु॰ (मेदिक) = मछुरिया जाति-विशेष मेदी ९

मो = मुझ- मोंहि ६, मोहि २६

मोती पु॰ (मोत्तिअ < मौक्तिक) = मुक्ता मोती मोतीहुं करउ १९

मोत्ता स्त्री॰ (मुत्ता < मुक्ता) = मोती मोत्ता २१

मोल पु॰ (मुल्ल < मूल्य) = कीमत मोलु २७ मोलु १४

मोह् सक॰ (मोहय्) = मुग्ध करना मोहहि १ मोही १० मोहइ ११
मोहइ ११ मोहइ १६

म्यामणि पु॰ (मज्झत्त < माध्यस्थ्य) = मध्यस्थता तटस्थता म्यामणि ९०

म्याल पु॰ (मल्ल) = भीत का अवष्टम्भन स्तम्भ म्यालउ ११

र अ॰ (अरे) = संबोधन अथवा पादपूर्ति के लिए प्रयुक्त शब्द र १४
र १८ र १७ र ४० र ४१ र ४१ र ४१

रंग पु॰ (रङ्ग) = वर्ण रंग बरंगा १७

रजायसु पु॰ (राजादेश) = राजाज्ञा : रजायसु १९

रत पु० (रक्त < रक्त) = लाल वर्ण, लाल रंग रक्त रुधिर रत्तु १० रत्तु ११ रत ४०

रति स्त्री० (रति) = कामदेव की अर्द्धांगिनी रति ४४

रतूपल पु० (रक्तोत्पल) = लाल कमल रतूपल ४२

रयणि स्त्री० (रजनी) = रात रयणिमुहां २१

रवि न० (रवि) = सूर्य रवि २०

रंजिय वि० (रंजित) = रंगा हुआ रांच २२

राइ स्त्री० (रात्रि) = मैत्री रौमराइ १८

राउल स्त्री० एक नायिका का नाम राउ [ल] ११ राउल १२ राउल १४

राउल पु० (राजकुल) = राजगृह राउल १० राउलु १४ राउलें २८ [राउ]ल ४९, राउलबल १ राउलबल ४१

राण पु० (राजन्) राणह १

राणा पु० (राजन्य ?) राणह १

रात पु० (रत < रक्त) = लाल वर्ण लाल रंग रातउ २ रातऊ ४, रात १२, राते २१

राहु पु० (राहु-केसर) = चकित या श्वेत केसवाला राहू १९,

राहु पु० (राहु) ग्रह-विशेष राहू २०

रीठ न० (रिष्ट) = वलय (?) रीठे ८

रूअ पु० (रूप) = आकृति रूअ २१

रूव सर्व० (रूप < रूप्) = रूपना पर्यंतपड़ना रूपड़ा रूपइ २८ रूपइ ४९

रूअर वि० (रूर) = सुंदर रूरी ११ रूरउ १० रूरीहि १० रूरे ११ रूरउ ११ रूरउ ११

रे अ० (रे) = संबोधन में प्रयुक्त अव्यय रे १९, रे १९, रे २१ रे २१ रे २२ रे २२ रे २१ रे ४१

रेह स्त्री० (रेखा) = रेखा रेह ७ रेह ११

रोड पु० = रचना के कवि का नाम रोड (रे) १ रोडें ४९

रोम पु० (रोमन्) = लोम रोआं रोमावलि २९, रोमावलि १८

लड पु० (लड) = माला की लड़ियाँ मोलसहड २१ (दे० लर)

लटिम स्त्री० (लड) = लम्बना घुम्बरला लटिम २०

लद्ध वि० (लब्ध) = प्राप्त लद्धा १५ (दे० लाद्ध)

लर पु० (लड) = माला की लड़ियाँ चंदलर ११ (दे० लड)

लहू सर्व० (लभ्) = प्राप्त करना लहि ११

लांब वि० (लम्ब) = लंबा दीर्घ लांबउ ११

लोवड़ पु० (देशज)=वस्त्र-विशेष लोवड़ १९
लाग वि (लग्न)=लगा हुआ लागु २१
लाछि स्त्री० (लक्ष्मी)=लक्ष्मी लाछि ३८, लाछिहि करउ ४२, लाछि ४१
लाठा वि (लष्ठ—दे०)=सुंदर, रम्य लाठा ८
लाभ् सक० (लभ्)=प्राप्त करना लाभी १५, लाभी १५, लाभी ४४ दे० लह
लाम्ह वि० (देशज)=लम्बा ढीला लाम्ह ८
ले सक (लभ<ला)=लेना ग्रहण करना लियाहि ७
लेख पु० (लेख)=लेखा लेखु १२
लोक पु० (लोक)=जन लोग समाज लोकहुंपी ७ लोकहि ४२
लोवणि स्त्री० (लवणता)=लावण्य लोवणि ७
वंदिरा पु० (वंदि<वन्दिन्)=स्तुति-पाठक मंगल-पाठक वंदिरो १६, वंदिरो २२ वंदिरो २४ वंदिरो २१
वखाण सक० (व्याख्यानम्)=विवरण देना कहना वखाणी १ वखाण इ १ वखाणी ४६
वछरा पु० (देशज)=वस्त्र-विशेष पछेवड़ा (?) वछरा १८
वत्थु/वथु स्त्री० (वस्तु)=पदार्थ चीज वत्थु १७ वथु ४५
वड वि० (वड)=बड़ा हुआ वडा १५
वन पु (वण्ण<वर्ण)=रंग वनां ५
वनवार स्त्रीह० (वण्णमाल<वर्णमाला)=ललाट पर का एक आभरण वन वारो २२
वन्न सक (वण्ण<वर्णय्)=वर्णन करना वन्निज्जइ १५
वर पु० (वर)=वर वर २ १८
वर्बर वि० (बर्बर)=पामर, मूर्ख वर्बर २१ वर्बर २१ वर्बर २१
वलिम वि० (वलित)=जिसको बल पड़ाया गया हो ऐसी वलिम ६
वह सक० (वह्)=धारण करना वहइ ४
वा स० (वा?)=वह वाही २५ वाही ४०
वाउल वि० (व्याकुल)=घबड़ाया हुआ अथवा (वातुल)=उन्मादग्रस्त वाउल १२
वागर पु (पद)=भाषा वागर १४
वाछ् सक० (वञ्छ<वाञ्छ्)=स्पर्धा वाछइ २१
वाटुल वि० (वर्तुल)=वृत्ताकार गोल वाटुला १७ वाटुलाई ४२
वाध वि० (बद्ध)=बँधा हुआ वाधउ ४ वाध ६, वाधणु १० वाधी १०
वान् सक० (वर्ण<वर्णय्)=वर्णन करना वानउ ६ वनणु ११ वानवि १८ वानवि १२, वा(न)इ १६, वानइ १५

बान	पु० (बाण<बाण)=बाण	बानू ८ बानउ ११ बान २७ २८ बानाहुँ ११
बानणी	स्त्री० (वाणिनी)=नटी नर्तकी मायाविनी स्त्री	बानणी १६
बार्	सक० (बारय्)=रोकना निरत करना	बारसि २२
बारि	न० (वारि)=जल	बारि १८
बाल	स्त्री० (बाला)=बाला स्त्री	बाल १७
बाहडिअ	पु० (बाहु)=हाथ भुजा	बाहडिअउ १२
बि	वि० (द्वि)=दो	बि० २६ बि ४१
बिअइल	पु० (विचकिल)=चमेली की जाति का एक फूल	बिअइल ६
बिच	पु० (विच्च-देशज)=बीच मध्य	बिचं २५
बिण	अ० (विणा<विना)=बिना	बिणु ५, बिणु २२
बिपय	पु० (विच्च-देशज)=बीच मध्य	बिपुमहि १७
बिलप्	सक० (वि+लभ्)=प्राप्त करना	बिलपी १६
बीअ	वि० (बिअ<द्वितीय)=द्वितीया तिथि	बीअर २५
बीबी	स्त्री० (बिम्बी)=कुंदरू की लता	बीबी १५
बुद्धि	स्त्री० (बुद्धि)=मति प्रज्ञा	बुद्धि २२ (दे० बुधि)
बुड्	अक० (बुड्ड<मज्ज्)=डूबना	बुडइ ४५
बुझ	सक० (बुध्)=जानना समझना	बुझइ ४५
बुधि	स्त्री० (बुद्धि)=मति प्रज्ञा	बुधि १६ (दे० बुद्धि)
बृहस्पति	पु० (बृहस्पति)=देव-गुरु	बृहस्पतिही १२
बे	वि० (द्वि)=दो	बेरंगा १७
बेणी	स्त्री० (वृन्त+इका)=फल-पत्र आदि का बन्धन	बेंगी २६
बेटी	स्त्री० (बिट्टी-देशज)=पुत्री लड़की	बटिया ५
बेटुल	वि० (वर्तुल)=वृत्ताकार, गोल	बेटुला २२
बेड	पु० (वड<वष्ट)=वष्टन मण्डन	बडमु २०
बेल	पु० (बेल्ल-देशज)=विलास कामक्रीड़ा	राउल बेल ४६
बेस	पु० (वेष)=शरीर पर वस्त्र आदि की सज्जा	बेस ९ बेसु ९ बेसु १० बेस १९ बस १९ बेसहि २७ बस ४० बेसु ४१ बसहुँ करी ४१ बेसु ४१ सुबेस ४५
बेह्	सक (वीक्ष्)=देखना	बेहु १५ बेहु १८
बोर	पु० (देश्य)=बादर उत्तरीय	बोरा ८ बोर ४०
बोल्लावणउ	सक (बोल्ल-देशज)=बोलना कहना	बोल्ले ६ बोल्ल १८, बोलउ ४१
बोल	पु० (बोल-देशज)=बोल वचन	बोलु २७ बोलु १४ बोलु १६, बोल्लहि ४४
बोल्ल	पु० (बोल-देशज)=बोल वचन बोल्ल	१८ (दे० बोल)

हास पु० (हास)=हँसी हासें १ हासें ४१

हिही अ० (हि)=ही उवेसुहि २८ पुमिवहि पुमिवहि १५, तिवतिहि १८, वाही ४०

हिअडीअ म० (हिअय<हृदय)=हृदय हीआ १४ हिआ १४ हिअइ ४४

हिहि अ० (हि)=ही ही १६ ही ४१ ही ४३ हि ४४

हहाईहुं अ० (पेषण)=पी हुं १६ हुं १६ हु २० हु २१ हुं २८ हु २८ हुं १२ हु ११ हुं १८ हुं १९

हु अक० (भू)=होना हो १७ हु १८ हुअउ १९

हुअ वि० (भूत)=बना हुआ हुवें २१

हूण हुपु (हूण)=इस नाम के प्रसिद्ध अनार्य देश का निवासी हूणि ९

हो क० (हो)=संबोधन या आमंत्रण का अव्यय हो ४१ हो ४१

